गुरसिख

- गुरसिख
- गुरमुख
- हरिभगत
- हरिजन
- सन्त जन
- भगत जन

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

१) गुरसिख प्रभ का रूप है, जे भाणे चले। गुरसिख विच्च वसदा प्रभ भूप है, कलिजुग बिललाए मूल ना हल्ले। साचा सिख मेरा सरूप है, अन्त काल सचखण्ड दर मल्ले। बेमुखां कलिजुग अन्ध कूप है, माणस जन्म कलिजुग गवा चले। महाराज शेर सिँघ स्वच्छ सरूप है, गुरसिख नाम निधान दर लै चले। दर दरवेश आप प्रभ, घर सिखां आवे। सुत्तयां पकड़ उठाल के, जोत सरूप प्रभ दरस दिखावे। कलिजुग जगत पछाण के, गुरसिखां टुंब उठावे। (१३ चेत २००८ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२) गुरमुख सो जिस नाम चितारया। गुरमुख सो जिस दरस दरसा रिहा। गुरमुख सो जो प्रभ चरन निमस्कारया। गुरमुख सो जिस दे जोत अधारया। गुरमुख सो जिस शब्द धुनकारया । गुरमुख सो जिस पारब्रह्म विचारया। गुरमुख सो जिस मिले बनवारया। गुरमुख सो जिस रिदे करतारया। गुरमुख सो जिस सोहँ रिदे चितारया। गुरमुख सो जिस मिले राम अवतारया । गुरमुख सो जिस तुद्धे कृष्न मुरारया। गुरमुख सो जिस कलिजुग महाराज शेर सिँघ दर्शन पा लिआ।

गुरमुख सो जिस गुरू विचारया। गुरमुख सो जिस प्रभ चरन लगा लिआ। गुरमुख सो जिस निहकलंक कल विच्च पा लिआ। गुरमुख सो जिस दूख निवारन भगवान बीठलो पा लिआ । गुरमुख सो जिस प्रभ दर माण दवा लिआ। गुरमुख सो जिस मिल हरि संगत हरि जस गा लिआ। गुरमुख सो जिस प्रभ अबिनाश घर में पा लिआ। गुरमुख सो जिस महाराज शेर सिँघ चरनीं सीस झुका लिआ।

गुरमुख सो जिस प्रभ ज्ञान दवा लिआ। गुरमुख सो जिस निजानंद समा लिआ। गुरमुख सो जिस प्रभ दया कमा लिआ। गुरमुख सो जिस सोहँ लिव ला लिआ। गुरमुख सो जिस कलिजुग महाराज शेर सिँघ रिदे धिआ लिआ।

गुरमुख सो जिस प्रभ गर्भ निवारया। गुरमुख सो जिस प्रभ दरस दरसा लिआ। गुरमुख

सो जिस प्रभ प्रगट जोत चमका रिहा। गुरमुख सो जिस लग गुर चरन जन्म सवारया। गुरमुख सो जिस सर्ब घट वासी आण दरसा लिआ। गुरमुख सो जिस महाराज शेर सिँघ संगत विच्च रला लिआ। (६ जेठ २००७ बिष)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

३) जंगल बेला आपे फोले, डूंघी कंदर फेरा पाईआ। उच्ची कूक आपणी गर्ज़ आपे बोले, छत्ती राग तर्ज़ समझ ना राईआ। तुरदा फिरदा दिसे ओहले, नज़र किसे ना आईआ । चारों कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी जीव जंत पाइण रौले, कलिजुग वेला नेड़े रिहा आईआ। पुरख अबिनाशी भार करे हौले, जूठा झूठा भार मिटाईआ। कर के गया आपणे कौले, कीता कौल पूर कराईआ। गुर गोबिन्द फरकन डौले, आपणा बल लए धराईआ। सिँघ शेर शेर सिँघ वसे एका चोले, चोला आपणा लए बदलाईआ। गोबिन्द गाए साचे ढोले, एका ढोला साचा माहीआ । गुरू चेला इक्क दूजे दे बणन विचोले, विचोला गुर आप हो जाईआ। गुर गुरसिख इक्क दूजे दे बणन तोले, साचा कंडा इक्क उठाईआ। गुरू गुरसिख इक्क दूजे दे वस्ण उहले, कदी गुरू कदी सिख रूप वटाईआ । पंज तत्त काया वेख जीव जंत सभ रसना पूरन बोले, पूरन मन्दर पूरन लुकिआ बेपरवाहीआ। आपणी धरती आपे मौले, साचे मन्दर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ शेर जंगल बेले फिरे चाईं चाईंआ। (१० ४५७)

४) सुत दुलारा साध संगत, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। अठ्ठे पहर रहे मंगत, देवणहार आप हो जाईआ। दर आयां चाढ़े साची रंगत, रंगत उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउम हंगत, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वडयाईआ। साचा सुत जेठा पुत्त, गुरमुख वड्ड सालाहीआ। जिस उप्पर साहिब जाए तुठ,

गुरमुख साचा जाणीए, जिस अन्तर ब्रह्म प्यार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस हिरदे वसे मुरार। गुरसिख सच्चा जाणीए, हरख़ सोग तों वसे बाहर। गुरसिख सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे जणाए साची सार।

गुरसिख सच्चा जाणीए, जगत नाता तोड़े मोह। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर चरन जाए छोह । गुरसिख सच्चा जाणीए, दुरमत मैल लेवे धो। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर गोदी जाए सौं। गुरसिख सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखा थाउँ थां।

गुरसिख सच्चा जाणीए, जो भाणा मन्ने करतार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जो नाता तोड़े जगत संसार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर चरन धूढ़ी करे शिंगार। गुरसिख सच्चा

जाणीए, गुर नाउँ करे अधार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर अमृत मंगे अमर भंडार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवणहारा।

गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस गुर के नाउँ रंग। गुरसिख सच्चा जाणीए, आत्म सोए सेज पलँघ। गुरसिख सच्चा जाणीए, घर अठ्ठे पहर अनहद शब्द वज्जे मरदंग। सतिगुर सच्चा आखीए, आपणे अंदर आपणे मन्दर आपे जाए लघँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी वंड। (१०—३५)

* * * * *

५) गुरसिख उह ना आखीए, जो माया रहे लपटाए। गुरसिख उह ना आखीए, जो तृष्ना भुक्ख वधाए। गुरसिख उह ना आखीए, जो जन शिंगार वेसवा रूप वटाए। गुरसिख उह ना आखीए, गुर संगत विच्च उच्चा बह बह आपणा रूप प्रगटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त रिहा समझाए।

गुरसिख उह ना आखीए, जिस आत्म अन्तर ना इक्क ध्यान । गुरसिख उह ना आखीए, जिस मन भरया माण अभिमाण। गुरसिख उह ना आखीए, जो मंगे पीण खाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी आपे जाणे आपणी सच पछाण। (१०—३५)

* * * * *

६) गोबिन्द आख सुणाइंदा, चार कुण्ट जैकार। जो वरन बरन रखाइंदा, सो सुख ना मेरे दरकार। जो मेरा कीता उल्टाइंदा, तिस पुच्छे ना कोई सच दरबार। जो मेरा अमृत सिंच रसना झूठ लगाइंदा, सो खाए जम की मार। जो मेरा बाणा तन पहनाइंदा, सो तक्के ना दूसर नार। जो मेरा केस सीस टिकाइंदा, सो जगदीस करे प्यार। जो मेरा सिख अखवाइंदा, तिस एका रूप नज़र आए संसार। गोबिन्द हर घट अंदर डेरा लाइंदा, कोई घट ना दिसे जिस सुत्ता ना पैर पसार। जो मेरे कोलों मुख भुआइंदा, तिस अग्गे मन्ने ना हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग खेल करे अपार। (१०—६१३)

* * * * *

७) जो जन आए मन हँकार, हँकार नाल हँकार रलाईआ। जो जन रक्खे मन विभचार, विभचार नाल करे कुड़माईआ। जो जन आए तन ख़वार, जगत ख़वारी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा निरासा ना कोई रखाईआ।

जैसी मन रक्खे आसा, वैसी वस्त वरताइंदा। गुरमुख विरला गुर दरस प्यासा, मनमुख आपणा मुख छुपाइंदा। दोहां विचोला खेल तमाशा, परदा उहला आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत अंदर हरि हरि वासा, हरिजन हरि की पौड़ी आप चढ़ाइंदा। (१०—१५४)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

८) जो जन हरि संगत जाणे भैण भरा, तिस आपणा घोड़ा फेर वखाइंदा। जो गुरसिख गुरसिख मिलण दा रक्खे चा, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। तिस गुरसिख दी गुर सतिगुर सेवा लए आप कमा, सेवा सेवक दार आप हो जाइंदा। फड़ फड़ बांहों उप्पर लए चढ़ा, सच सिँघासण आप बहाइंदा। सचखण्ड दवार खुल्ला, आपणा मन्दर आप वखाइंदा। जोती जोत मेल मिला, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। साचा धर्मी धर्म कमा, नेहकरमी कर्म वखाइंदा। गुरसिख मरे प्रभ मिलण दा चा, जगत खण्डा वार ना कोई कराइंदा। सतिगुर पूरा गुरसिख सीस आपणी झोली लए पा, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। प्रेम रत्त आपणा आप लए रंगा, रंग रंगीला वेख वखाइंदा। गुरमुख तेरा सीस जगदीस आपणे मन्दर लए टिका, साचा मन्दर सोभा पाइंदा। जिथ्थे दूजा कोई जाए ना, कबीर जुलाहा कूक सुणाइंदा। सभ तों उप्पर वसे मेरा शहनशाह, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, साचा हुक्म सुणाइंदा। (१०—८४०)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

९) जिनां मन्नी साहिब सतिगुर दी रज़ा, तिनां रहीम रैहमान रहमत दए कमाईआ। जुग चौकड़ी भगत प्यार पिच्छेआए भज्जा, लोकमात फेरा पाईआ। प्रेम प्रीती अंदर बज्झा, चारों कुण्ट हत्थ किते ना आईआ। गुरमुखो आपणे सतिगुर नूं दे के वेखो सद्दा, घर विच्चों मिले चाईं चाईआ। बिन मक्के काबिउँ करा दए हज्जा, हज़रत इक्को नूर अलाहीआ। किसे नाल नहीं करदा दग़ा, जो दोए जोड़ चरन ध्यान लगाईआ। पिच्छे धन्ने दा चारदा रिहा ढग्गा वच्छा, की तुहानूं मिलण कदे ना आईआ। हुण लक्ख चुरासी जीव जंत ओसे दा बच्चा, वांग बच्चया गोद उठाईआ। जो गुरसिख गुर दा शब्द कमावे होवे सच्चा, सच समझो ओसे नूं नज़री आईआ। जे ना आवे नानक लिखया लेख हो जाए कच्चा, पैगम्बर देवे ना कोई गवाहीआ। क्यों एहनां दोहां उच्ची मंज़ल चढ़के लिआंदा पता, जिस घर वेखण कोई ना जाईआ। उस दा लेख तुहाढ़े अग्गे रक्खा, गुरू ग्रन्थ दए गवाहीआ। जिस भाग लगाया तत्त अठा, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश मन मत बुध जोड़ जुड़ाईआ। अन्तम इस दे अंदर ढका, परमात्म वंड वंडाईआ। इस वेखण लई तुहाढ़े अंदर इक्क होर लाई अक्खां, निझ नेत्र करके जगत रिहा सुणाईआ। उस दे उत्ते प्रभ आपणा परदा ढका, बिन सतिगुर पूरे सके ना कोई उठाईआ। कोई ना जाणे निक्का के वड्डा, जिस जाणिआ तिस आपणा रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द सद प्रेम प्यार दा भुक्खा, नित नवित्त राह रिहा

वखाईआ। गुरमुखो गुरसिखो आपणे अंदर आपणे नाल कर लउ मता, बाहरों संगी संग ना कोई रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, खोज अंदर जन भगतां चुकाए भय डर, भयानक नज़र ना आईआ। (१६—३५६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

१०) घर बहणा दरसन नैणा, मुखड़ा नूर नूर दरसाईआ। गुरसिख मन्नणा गुर का कहणा, भुल्ल कदे ना जाईआ। साध संगत विच्च मिल के बहिणा, हरि संगत हरि का रूप वखाईआ । गुर चरन प्रीती साचा गैहणा, जगत शिंगार ना कोई वडयाईआ। आदि अन्त भाणा सैहणा, हरि भाणे विच्च समाईआ। आपे देवे लहणा देणा, पूरब लेखा झोली पाईआ। आदि अन्त भगत भगवन्त धाम इक्ठे रहणा, एका सेजा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। (१०—६३४)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

११) गुर सतिगुर गुरसिख इक्क दूजे दे होण वस, पल्ला सके ना कोई छुडाया। गुरसिख कोलों सतिगुर कदे ना जाए नट्ठ, जो गुरसिख गुर गुर दरस तिहाया। सतिगुर कोलों गुरसिख कदे ना होए वक्ख, जिस प्रेम बंधन पाया। शब्द डोरी साची नथ्थ, आपणी हत्थीं देवे गंढ, गंढ देवणहारा दिस किसे ना आया। गुरमुख चढ़ाए आपणे रथ, बण रथवाही सेव कमाया। गुरसिख तेरे सगल विसूरे जाइण लथ्थ, सतिगुर पूरा दरस दिखाया। जिंनां चिर गुरसिख कहे ना बस बस, गुर पूरा आपणा रूप ना सके पलटाया। कोटन कोट ब्रह्मण्ड पार कर गुरसिख तेरे दवारे आए नस्स, ब्रह्मा विष्न शिव अद्धविचकार बैठे राह तकाया। तेरा मेला हस्स हस्स, तेरी सुरती तेरी आत्म तेरा परमात्म लए परनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देवे दर, हरि का नाउँ हरि सन्त भगवन्त मेल मिलाया। (१०—७१५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

१२) जन भगतो एह पुरख अकाल दी पहली सदी, सदमे तुहाढ़े दए चुकाईआ। जिन्नां दी प्रीत इक्को नाल लग्गी, लागी लागण होर ना कोई बणाईआ। तुहाढ़ी इक्को अक्ख ना कोई सज्जी ते ना कोई खब्बी, जिस नेत्र विच्चों नूर नज़री आईआ। तुहाढ़े अंदर इक्क निक्की जेही डब्बी, जो घर विच्च घर दित्ता बणाईआ। उस विच्च तुहाढ़ी वस्त अमोलक दब्बी, उह आपे तुहाढ़ी आत्मा नूं लग्गे चंगी, मन दी वासना ना कोई वधाईआ। तुसी केहड़ा नहौण जाणा किसे गंगी, जमना सुरसती गोदावरी तुहाढ़े चरन चुम्मे चाईं चाईआ। तुहाढ़ा झगढ़ा मुक गया सुदी वदी, इक्को रुत काया बुत्त दए वखाईआ्। तुहाढ़ी वासना अंदरों रिहा कढ़ी, दुरगंधी दित्ती तजाईआ। तुसां केहड़ी खाणी मच्छी डड्डी, डण्डौत इक्को दित्ती समझाईआ। धृग गुरसिख जो खावे हड्डी, एह गोबिन्द गया समझाईआ। गोबिन्द दी कृपान

धार किसे बक्करे दी गर्दन नहीं वढ्ढी, प्रेम रत नाल खण्डा दित्ता रंगाईआ। गोदावरी कन्ढे माधो नाल कीती नहीं कोई ठग्गी, बन्दे दा लहणा झोली पाईआ । किरपान मिआन विच्चों नहीं कढ्ढी, ना बक्करयां कोई झटकाईआ। सोलवें साल विच्च सारे हुक्म कर देणे रद्दी, नवां लेखा देणा बणाईआ । चार वरन सिक्खी आवे भज्जी, नौं खण्ड पृथ्मी नेत्र नैणां राह तकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। (१६—१२८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

१३) छुरा कहे मेरा रूप तिखा, तिखी धार जणाईआ। जिस दा लेख परवरदिगार ने लिखा, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जिहड़ा धर्म दी धार विच्च पूरा दिसे ना सिखा, सिख सतिगुर विच्च ना कोई समाईआ। उस दा सदी चौधवीं अन्तम निकले सिट्टा, सिट्टेबाजी ख़लक ख़ुदाईआ । कीमत पैणी नहीं पत्थर इट्टां, मढ़ी गोर रंग ना कोई रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ। (२४ माघ शै सं ७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

१४) घड़ा कहे जन भगतो मैं तुहाढ्ढा पिछला मित्र पुराणा यार अग्गे वास्ता पाउण आया सांझा, साथी हो के दिआं वखाईआ। जगत अन्धेर झुल्लणा झांजा, आब हत्थ किसे ना आईआ । घड़ा कहे मैं गुरमुखां नूं घर घर जल होणा पिआउँदा, एह मेरी बेपरवाहीआ। हरिजन ख़ुशीआं विच्च सभ कुझ होवे खांदा, जगत तोट रहे ना राईआ। पर उह नहीं छड्डणा जिस ने खाधा सूर गाँ ते ढांडा, ढांडीआं खाण वाले ढोर देणे बणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सदा सतिगुर शब्द दा बांदा, बिनां बन्दगी वाल्लयां तों सतिगुरू बन्दा ना किसे बणाईआ । मालवे वालिओ तुहाढ्ढे कर्मां दा आपणे उत्ते लद्दण आया इक्को वार लांगा, बोझ आपणे कंध उठाईआ। किसे दा रहण नहीं देणा रोज़ा निमाज़ बांगा, अज़ां आपणे विच्च छुपाईआ। चारों कुण्ट वज्जणीआं चांगाँ, चार यारी दए दुहाईआ। त्रेते दीआं तृप्त दीआं पूरीआं करनीआं तांघा, विछोड़े वाले तिन्ने साथी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उधरों आया इधर जावे वहिंदा, वहण ज़िमीं असमान वहाईआ।

(१८ कत्तक सै सं ५ सुलक्खण सिँघ दे गृह)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

१५) श्री भगवान कहे, जन भगत तेरे प्यार दी भुक्ख, तृष्ना जगत ना कोई वखाईआ । मिल के तेरा जन्म जन्म दा मेटां दुःख, दलिद्दर दिआं गवाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों चुक्क, सच दवार इक्क समझाईआ। अगला दे के धुर दा सुख, चिन्ता ग़म दिआं मिटाईआ । सुफल कर के जननी कुक्ख, मुख उजल दिआं वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद देवणहार सरनाईआ।

श्री भगवान कहे जन भगत तेरे अन्तर लावां खिच्च, शब्दी तार सतार हिलाईआ। दर्शन दे के निझ, नैण दिआं खुल्ह़ाईआ। फेर नज़री आवां विच, होए ना कदे जुदाईआ। सतिगुर मिलिआं पंज तत्त काया माटी पुतला फेर बणदा सिख, शिश आपणा रूप वटाईआ। अग्गे मेला नाल इक्क, एकंकार रंग चढ़ाईआ। मानस जन्म बाज़ी लई जित्त, हार चरनां हेठ दबाईआ । सच प्रेम प्यार दा मिल्या हित्त, हितकारी होया आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कर्म दा लेखा देवे लिख, लिखत ललाट दए बदलाईआ। (१६-२६३)

* * * * *

१६) भगत भगवान रिहा तक्कदा, निझ नैण वेख वखाईआ। लहणा देणा देवे हकीकत हक़ दा, हाकम हो के बेपरवाहीआ। झगढ़ा मुका के कूड़े शक़ दा, संसा दए गवाईआ। भेव खुल्ह़ा के पुरख समरथ दा, पड़दा दए उठाईआ। झगढ़ा मुका के रहणा वक्ख दा, इक्को घर दए वसाईआ। जिथ्थे दीपक जोती जगदा, जलवा नूर करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी वज्जदा, नाद धुन शनवाईआ। अमृत झिरना रिसदा, रस्ता रिहा वखाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले दिसदा, जिस जन आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी भगत सुहेला इक्क इकेला नित नवित्त भगतां लेखा लिखदा, लोकमात दए वडयाईआ। नाता जोड़ के पिता पुत दा, पतिपरमेशवर आपणी गोद उठाईआ। उत्तम जन्म श्रेष्ट जामा पूरन गुरसिख दा, जो सिख सतिगुर विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा चुकावे जिस जिस दा, चार वरन अठारां बरन वेखणहारा थाउँ थाईंआ। (१६—२६६)

* * * * *

१७) श्री भगवान कहे दुनियां दा झूठा जाणो रिश्ता, सगला संग ना कोई बणाईआ। सभ ने कूच करना आहिस्ता आहिस्ता, अग्गे पिच्छे भज्जण वाहो दाहीआ। इक्क अकाल उत्ते कर लउ सच्चा निसचा, जो निहचल धाम दए पुचाईआ। परम पुरख दा मन्नो इष्टा, गुरदेव इक्को सोभा पाईआ। जो अंदरों खोल्ह़े दृष्टा, दृष्टी दए बदलाईआ। झगढ़ा मुका के दीन दुनी सृष्टा, श्रेष्ट आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा दए चुकाईआ। (१६—२६७ २६८)

* * * * *

१८) साची धार पुरख अकाल, लोकमात चलाईआ। एका शब्द इक्क प्यार, इक्क दवार चार वरन वखाईआ। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क दूजे नूं ना करन खुआर, ज़ात अजाति मेट मिटाईआ। मुस्लिम सिख हिंदू ईसाई इक्क दूजे नूं ना देवण दुरकार, दर दरवाज़ा इक्क

वखाईआ। सिख नाल सिख लड़े होए गवार, अमृत रस ना कोई चखाईआ। जगत दुहागण नार विभचार, जो बैठी कन्त भुलाईआ। आत्म सेजा ना सकी शिंगार, आपणा घर ना आप सुहाईआ। आपणीआं भुजां ना सकी उभार, चतरभुज ना मेल मिलाईआ। दर दर कूके करे पुकार, बिन सतिगुर पूरे कोई ना सुणने पाईआ। एका ओट रक्खो निरँकार, गुर नानक गया समझाईआ। किसे दर ना मंगो बण भिखार, आपणे घर विच्च घर आपणा खोलु खुलाईआ। जिस जन मिले आप निरँकार, सृष्ट सबाई पिच्छे फिरे हलकाईआ। गुरसिख आपणा सिर गुर चरनां उतों वार, गुर तेरी लोकमात करे रुशनाईआ। सिखी सिदक सिख कर विचार, साखीआं पढ़ पढ़ ना वक्त गवाईआ। वालों निकी धारों तिखी रक्खी आप करतार, गुर गोबिन्द एह समझाईआ। जो चढ़े बेड़े सो उतरे पार, सतिगुर पूरा पार कराईआ। सोहे सीस सच्ची दस्तार, समरथ हत्थ आप टिकाईआ। उच्ची पदवी देवे आप निरँकार, मानस ज़ात की दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आप वरताईआ। (०६ ७७ ७८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

१६) निरगुण धार हरि अव्वली, आपणी आप उपाईआ। गुरमुख वेखे साची कली, लोकमात आप महकाईआ। गुर गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा होका देवे गलीओ गली, गुरसिख सज्जण लए उठाईआ। आपणा सीस रक्खणा तली, लोकलाज जगत गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। (०६ १७४)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२०) सन्त निशाना हरि भगवाना, एका एक समझाइंदा। पंज तत्त देवे माणा, अभिमाणा मेट मिटाइंदा। आपणा राग सुणाए तराना, धुन आत्मक आप वजाइंदा। एका बन्ने साचा गाना, पुरख अबिनाशी सगन मनाइंदा। एका देवे धुर फ़रमाणा, आपणा अक्खर आप वखाइंदा। जीवां जंतां विच्च वसे हो हो निमाणा, निमाण निमाणयां आप अखवाइंदा। हरि का सिर ते मन्ने भाणा, सो सन्त मात अखवाइंदा। ब्रह्मे ब्रह्म रूप वखाना, पारब्रह्म आप समझाइंदा।
(०६—४६५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२१) भगतां चाढ़े भगती रंग, भगवन आपणी दया कमाईआ। नाम अमोलक वस्त लैण मंग, काया गोलक विच्च रखाईआ। लोकमात ना होए नंग, जगत नगेज़ ना कोई वखाईआ। जो जन मंगे माझा दुध्ध मिट्ठा शहद माखिउँ खण्ड, हरि नाम तुल ना राईआ। ना उह सुहागण ना उह रंड, जो बस्तर जगत रही हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे एका वर, नौं अठारां सेव कमाईआ।

जगत बसतर मंगे रोटी, दाल प्याला नाल। अठ्ठे पहर वासना रहे खोटी, ना शाह ना कंगाल। बिन गुरसिख चढ़े ना कोई चोटी, कोटन कोटी रहे भाल। दर दर मंगदे बोटी बोटी, मेल मिले ना दीन दयाल। तेड़ बन्नण झूठी धोती, आत्म उठाए ना कोई सोती, परदा देवे ना कोई उप्पर डाल। जगत तृष्ना झूठे मोती, माया ममता सुरत ना सके कोई संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत खेले खेल निराल।

पैरीं मंगे जीव जुत्ती, जीवण जुगत ना कोई वखाईआ। आसा तृष्ना लड़ फड़िआ वासना कत्तुी, कूकर सूकर बैठ्ठे जून वटाईआ। हउमे हंगता विच्चों ना पुट्टी, साचा रंग ना कोई चढ़ाईआ। पंज तत्त काया चोली वेले अन्तम जाए लुट्टी, ना सके कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन शिंगार एका जगत दए वखाईआ। (१०—४१ ४२)

* * * * *

२२) जन भगतां जुड़े धुर दा नाता, मन चंचल ना कोई चतुराईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी राता, सतिगुर साचा शब्द करे रुशनाईआ। रूह बुत्त दोवें होवे पाका, पतित पुनीत करे सफाईआ। काया मन्दर अंदर घर ठाकर स्वामी परम पुरख मिले आका, जिथ्थे अकल बुद्धि दी चले ना कोई चतुराईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाशा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। घर मन्दर गृह महल्ल अट्टल मुनार वखाए ठांडा, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जो सतिगुर हुक्म शब्द शब्द हुक्म सच कमांदा, करनी दी कीमत आपे लए पाईआ। लक्ख चुरासी विच्च गेड़ ना कोई भवांदा, जन्म जन्म वंड ना कोई वंडाईआ। अन्त कन्त भगवन्त साहिब सतिगुर आपणा मेल मिलांदा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण आत्म परमात्म प्रेम प्यार मुहब्बत दा नूर रक्खे सांझा, दीन मज़ब जात पात ऊँच नीच शरअ वंड ना कोई वंडाईआ। (२०—१३६ १४०)

* * * * *

२३) जिस घर लेखा होए फ़ेल, पर्चा नाम रखाया। तिस द्वारे मिले सज्जण सुहेल, सगला संग रखाया। रल मिल के इक्क दूजे नूं प्रेम प्यार दा चाढ़ो तेल, सरगुण साचा सगन मनाया। जिस नूं प्रभू मिलण दा नहीं वेहल, तिस दा धन्दा कम्म किसे ना आया। एसे करके कीता खेल, हरि संगत तेरा प्रेम प्यार वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां विचोला बण के अगला पिछला जोड़ जुड़ाया। (१४—२५६)

* * * * *

२४) केसर कहे मैं जिस नूं तिलक लगावां, दिआं माण वडयाईआ। उस दे पल्ले बन्नां

धुर दा नावां, इक्क ज़ीरो इक्क माया वलों इक्क सौ इक्क गंढु दिआं बंन्हाईआ। जिन्हां चिर इक्क ज़ीरो ना होवे इक्क, ओन्हां चिर गोबिन्द दा बणे कोई ना सिख, भावें कोटन कोट शास्त्र सिमरत वेद पुरान गए लिख, लिखिआं पढ़यां प्रभ नूं मिलण कोई ना पाईआ। जिस मिलयां तिस करया आपणा हित्त, हितकारी हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। (२१—७१)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२५) गंढु चुक्क के हरि जू हस्से, आपणी दया कमाईआ। कढ्ढां बाहर जो विच्च चुरासी फसे, फांसी सभ दे गलों लाहीआ। भगत दुआरे इक्को मार्ग दस्से, रहबर बणे बेपरवाहीआ । जगत क्रिया मेटे रट्टे, रटन इक्को नाम वखाईआ। माणस जन्म ना कौडीआं रले ना घट्टे, माणक आपणे रंग रंगाईआ। माया ममता मोह किसे ना फटे, नाम डोरी इक्को तन्द बंधाईआ । गुर गोबिन्द आपणे सिद्दे सादे दस्से पते, काया अंदर पत्रा दए उलटाईआ। दस्म दुआरी दस्म पातशाह दसवीं रात बह बह हस्से, हस्स हस्स आपणी खुशी मनाईआ। क्यों, गुरमीत सिँघ गुरमुखां दित्ते कछहिरे कच्छे, धीरज जॅत बंधाईआ। वसाखी उत्ते बचन दस्से सच्चे, सच सच जणाईआ। गुरमुख सो जो धी भैण कोई ना तक्के, जो तक्के तिस मिले ना कोई थाईंआ । जिस करना प्रेम, सो सतिगुर सरनाई ढठ्ठे, दूजी प्रीती कम्म किसे ना आईआ। पुरख अकाल दे सारे बण जाउ बच्चे, बच्चा गोबिन्द नाल उंगलीआं रिहा फिराईआ। जोती जाता पुरख बिधाता लूं लूं अंदर रचे, साढे तिन्न करोड़ आपणे नाल जोड़, जोड़ी जोड़ वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अग्गे गुरमुख होर नूं पई लोड़, जो बैठा ध्यान लगाईआ। (१४—२५८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२६) सन्त सुहेले सो कहीए सिख, जिस सतिगुर दया कमाइंदा। नाम पदार्थ पाए भिख, भिच्छया इक्को इक्क वरताइंदा। बिन दोहां अक्खां पए दिस, निज नेत्र नज़री आइंदा। सच प्रीती करे हित, प्रेम प्यार नाता जोड़ जुड़ाइंदा। करवट लै बदले पिठ, सनमुख स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। अबिनाशी करता हो के वसे चित, चितवित ठगौरी कोई ना पाइंदा। पतिपरमेशवर हो के लेखा जाणे मात पित, पिता पूत गोद उठाइंदा। जन्म कर्म दा लहणा देणा घर आ के जाए नजिठ, अगला पिछला पन्ध मुकाइंदा। सो गुरमुख सन्त सुहेला कहीए सिख, जिस साख्यात काया मन्दर अंदर निज नेत्र सतिगुर जोती नूरी नज़री आइंदा। निहकरमी हो के अगला लेखा दए लिख, पिछला लेख आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत भगवन्त लए वर, घर मन्दर काया अंदर इक्क सुहाइंदा। (१६—७९६ ७९७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२७) सो गुरमुख सूरा कहीए सन्त, जो सतिगुर सरन सेव कमाइंदा। जिस दा नाम निधान एका मंत, मंतर अवर ना कोई दृढ़ांइंदा। घर स्वामी हंढु ;ींदा धुर दा कन्त, मालक खालक खलक विच्च ना कोई बदलाइंदा। तिस दा लहणा देणा आपणे हत्थ रक्खे अन्त, अन्तर अन्तर लेखा सर्ब चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जन्म कर्म दा बण के पांडा पंडत, बिन वेदी बिन सोढ्ढी, बेदी बण अंदर भेदी भेव भाव भउ आपणे विच्च रखाइंदा। (१६—४५५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२८) जीवां जंतां विच्च वसे हो हो निमाणा, निमाण निमाणयां आप अखवाइंदा। हरि का सिर ते मन्ने भाणा, सो सन्त मात अखवाइंदा। (६—४६५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

२६) जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त साध सन्त भगत भगवन्त आत्म परमात्म देवे वर, वर दाता पुरख बिधाता, कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा सच करे प्रकाशा, जो जन शब्द सतिगुर उत्ते रक्खे भरवासा, संसा रोग ग़म चिन्ता हिँसा अंदर बाहर कोई ना पाईआ। (१६—७३६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

३०) सतिगुर साचे साचे दी लग्गो सरन, चरन कँवल ध्यान लगाईआ । नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज लोचन नैण होवे रुशनाईआ। सुरती मन बुद्धि तों परे सतिगुर शब्द विच्च मिल के आपणी मंजल चढ़न, चढ़ चढ़ पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म एका धार तूं मेरा मैं तेरा बिन अक्खरां ढोला पढ़न, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोई हलाईआ। झगढ़ा रहे ना जन्म मरन, लक्ख चुरासी ना कोई भुआईआ। इक्को इक्क एक दी सरन, सरनगत इक्को नज़री आईआ। मन वासना विच्च गुरमुख साचे कदे ना सड़न, जिन्हां दे सिर ते सतिगुर पूरा आपणा हत्थ रखाईआ। बिन सतिगुर पूरे संसार सागर जीव जंत मूल ना तरन, पार किनारा ना कोई वखाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल दयानिध ठाकर सर्ब स्वामी अन्तरजामी धुर दा वरन, दयावान मेहरवान परवरदिगार सांझा यार लाशरीक हक़ महिबूब वसे अर्श फर्श उच्च अरूज, दूज विच्च कदे ना आईआ। जिन्हां गुरमुखां सतिगुर सरन लै के आपणी आप पाई सूझ, उन्हां दा मन उन्हां अंदर आपे गया झूज, पंचम मिले के पंच परपंच करे ना कोई लड़ाईआ । गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो साचे सन्तो सतिगुर मंज़ल प्रेम हदूद, जगत वंड ना कोई वंडाईआ । (१६—८०३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

३१) अगम्म अपार अलक्खणा अलक्ख, लेखा लिख्त विच्च ना आईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे करे सख, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच्च समाईआ। जून अजून होए प्रतक्ख, बेअन्त सच्चा शहनशाहीआ। भगत भगवन्त साचे सन्त करे वक्ख, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। मनमुख जीवां अन्तम मुल्ल पए ना कौडी कक्ख, हट्टो हट्ट आप विकाईआ। गुरसिखां सगल विसूरे जाइण लथ्थ, जिस सतिगुर पूरा दरस दिखाईआ। एका देवे वस्त नाम साची वथ्थ, वाह वा गुरू वड्डी वडयाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सूरा एका मार्ग गया दस्स, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। गुरसिख तेरा सीस दूजे दर ना जाए ढठ्ठ, तेरी कीमत करता आपे पाईआ। आदि जुगादि लए रक्ख, रक्खणहारा इक्क अखवाईआ । जिस दा सत्थर हउं बैठा घत, लेखा जाणे थाउँ थाईआ। गुरसिख तेरा बूटा लगाया आपणी रत्त, रत्ती रत आप सुकाईआ। मेरा नाउँ तेरी मत, दूजी धार ना कोई वखाईआ। एका मिले कमलापत, पारब्रह्म वड्डी वडयाईआ। वेले अन्तम लए रक्ख, राए धर्म ना दए सज़ाईआ । देवे दरस हो प्रतक्ख, निहकलंक निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। हरि का मन्दर गुरूदवार कदे ना जाए ढठ्ठ, इट्ट गारा ना कोई लगाईआ । दिवस रैण वजाए अनहद सट्ट, ताल तलवाड़ा आपणे हत्थ रखाईआ। तेरे अंदर दूई द्वैत ना होवे फट्ट, आपणा फट अन्तम गया खुलाईआ । नौं खण्ड वखाए तेरा हट्ट, लोकमात दए वडयाईआ। आवण जावण छुट्टे तीर्थ तट्ट, गंगा गोदावरी जमना सुरसती फेरा कोई ना पाईआ । साचा मार्ग एका दस्स, सतिजुग साचा राह वखाईआ । एका तख्त बहे सज, तख्त ताजां वाला सच्चा शहनशाहीआ। आपणा चरन दुआर वखाए साचा हज्ज, मक्का मदीना फेरा कोई ना पाईआ। सृष्ट सबाई परदा लए कज्ज, जो जन आए सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तम वर, गुर पीर अवतार इष्ट देव नमो नमो आपणा सीस आप झुकाईआ। (०६—६४१)

* * * * *

३२) सतिगुर दर गुरसिख डेरा, दर साचा आप सुहाइंदा। गुरसिख घर सतिगुर खेड़ा, साचा खेड़ आप वसाइंदा। दोहां पैंडा नेरन नेरा, इक्क दूजा पन्ध मुकाइंदा। जुगा जुगन्तर चाउ घनेरा, आपे आस रखाइंदा। चौकड़ चौकड़ी देवे गेड़ा, पान्धी पन्ध मुकाइंदा। लहणा देणा चुक्के मेरा, मेरा मेरा आपणे नाल मिलाइंदा। लेखा चुक्के संझ सवेरा, एका चन्द चढ़ाइंदा। लक्ख चुरासी कट्टे फेरा, फेरा फेरे विच्च दुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच्च दया कमाइंदा।

सतिगुर गृह गुरसिख रहे, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। गुरसिख मन्दर सतिगुर बहे, वाह वाह वज्जदी रहे वधाईआ। इक्क सुहाए साचा थांए, थान थनंतर दए वडयाईआ । इक्क जणाए साचा नांए, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। एका पकड़ उठाए बांहे, आपणी सेव कमाईआ। एका देवे ठंडी छाँए, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। एका कट्टे जम की फाहे, फासी जम्म रहण ना पाईआ। सतिगुर होए गुरसिख सहाए, भयानक आपणा रूप वटाईआ । गुरसिख आए गुरू प्रथाए, प्रिथम आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच्च सोभा पाईआ।

सतिगुर घर गुरसिख वासा, दर दर आप सुहाइंदा। गुरसिख घर सतिगुर प्रकाशा, जोती जोत डगमगाइंदा। निरगुण सरगुण करे पूरी आसा, एका वस्त नाम वरताइंदा। सेवा करे बण बण दासा, दासी दास खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जुगा जुगन्तर वेस वटाइंदा। सतिगुर घर वेखे गुरसिख तमाशा, साचे मण्डल रास रचाइंदा। गुरसिख घर सतिगुर वस्से पासा, विछड़ कदे ना जाइंदा । गुरसिख गुर गुर करे बन्द खुलासा, बन्दी तोड़ आप हो जाइंदा। गुरसिख गुर चरन करे निवासा, दर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप वसाइंदा।

सतिगुर घर गुरसिख मन्दर, साचे मन्दर आप वडयाईआ। सतिगुर घर गुरसिख अंदर, सच सिँघासण आसण लाईआ। गुरसिख घर सतिगुर तोड़े जंदर, आपणा दर लए खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख एका घर वसाईआ।

सतिगुर घर गुरसिख मेला, मेल मिलावा आप कराईआ। गुरसिख घर वसे सज्जण सुहेला, सतिगुर सच्चा बेपरवाहीआ। राए धर्म दी कट्टे जेहला, जम का दंड रहे ना राईआ । आपणे रंग रंगाए गुरू गुर चेला, गुर गुर चेला विच्च समाईआ। साहिब सुल्तान सज्जण सुहेला, शाह पातशाह होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख खेड़ा भाग लगाईआ।

गुरमुख खेड़ा साचा कोट, हरि सज्जण वेख वखाइंदा। सतिगुर खेड़ा जगे निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाइंदा। गुरसिख खेड़ा शब्द नगारे लगे चोट, अनादी नाद वजाइंदा। सतिगुर खेड़ा गुरमुख दुरमत मैल धोत, पतित पुनीत आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच्च खेल खिलाइंदा।

सतिगुर खेड़ा गुरसिख हवन, हवनी हवन जणाइंदा। गुरसिख खेड़ा सतिगुर पवण, ठंडी ठार आप चलाइंदा। कट्टणहारा अवन गवन, आपणे रंग रंगाइंदा। मेल मिलाए जिउँ दुष्ट दमन, दामनगीर आप अखवाइंदा। आपे होए साचा ज़ामन, साची ज़ामनी आप निभाइंदा । आप फड़ाया आपणा दामन, अन्तम पल्लू आपणे हत्थ रखवाइंदा। गुरसिख खेड़ा सच गरामन, साचा मन्दर आप सुहाइंदा। सतिगुर दिसे आमुण सामुण, मुख परदा ना कोई रखवाइंदा। ब्रह्म रूप ना कोई ब्रह्मण, पारब्रह्म रूप जणाइंदा। सतिगुर गुरसिख इक्क दूजे नूं जानण, दूसर भेव कोई ना पाइंदा। एका प्रेम ब्रह्म ज्ञानन, साची विद्या इक्क पढ़ाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी शामन, साचा चन्द चढ़ाइंदा। जगत तृस्ना मिटे कामन, त्रैगुण अतीता सति सति कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे गुरसिख घर, सतिगुर मन्दर आप वडिआइंदा।

सतिगुर मन्दर गुरसिख दरवाज़ा, एका एक खुल्हाईआ। गुरसिख अंदर वसे ग़रीब निवाज़ा, रूप रंग रेख ना कोई रखवाईआ। शब्द अगम्मी एका ताजा, साचा असव रिहा दौड़ाईआ।

शाहो भूप बण राजन राजा, साची रय्यत वेख वखाईआ। आपणा रच रच आपे काजा, आपे खुशी मनाईआ। आपे रक्खे साची लाजा, गुर सतिगुर होए सहाईआ। गुर गुर देवे साचा दाजा, साची वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी लाजा आप रखवाईआ।

सतिगुर गृह गुर रक्खे लाज, गुर आपणा खेल खलाइंदा। गुरसिख गृह सतिगुर साजण साज, सतिगुर आपणा आसण लाइंदा। आप चलाए आपणा जहाज़, साचा बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। पाहरू पत्तण बण ग़रीब निवाज़, एका घाट डेरा लाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख विरले मारे वाज, जगत सोए आप उठाइंदा। गुरसिख तेरा सीस मेरा ताज, सतिगुर खुशी मनाइंदा। तेरा रंग मेरा राज, तेरा रूप मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा घर आप समझाइंदा।

सतिगुर घर सच निशान, गुरसिख गुर गुर जणाईआ। गुरसिख घर वसे श्री भगवान, आपणा डेरा लाईआ। लेखा जाणे दो जहान, अनभव प्रकाश कराईआ। चार जुग होए हैरान, हरि का भेव कोई ना आईआ। प्रगट होए जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, काया माटी फोल फुलाईआ। निशअक्खर पाए दान, हँ ब्रह्म इक्क पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क किरपान, काया गातरे आप टिकाईआ। अमृत देवे पीण खाण, निझर झिरना रस झिराईआ। सतिगुर घर गुर गोबिन्द वेखे आण, आप आपणा रूप छुपाईआ। गुरसिख गुर करे परवान, आपणा बंधन पाईआ। आप वसाए इक्क मकान, एका खेड़ा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर सोभा पाईआ।

गुरसिख दर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। गुरसिख दर मिले मेला नारी कन्त, नर नरायण मेल मिलाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। आपणी महिमा जणाए अगणत, लेखा लिखत विच्च ना आइंदा। सो सज्जण सो सच्चा सन्त, जिस आपणे दर बहाइंदा। दूजे दर ना जाए मंगत, साची भिच्छया झोली पाइंदा। नाता तोड़ जेरज अंडत, उत्भुज सेतज पन्ध मुकाइंदा। लक्ख चुरासी करे खण्डत, एका खण्डा नाम फिराइंदा। गुरसिख ज्ञान बोधी साचा पंडत, जिस जन सोहँ अक्खर जाप जपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच्च आसण लाइंदा।

घर मेला जगदीस जगदीसर, साची दिशा वेख वखाईआ। गुरसिख वड्डा तपी तपीश्र, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। गुरसिख वड्डा रिखी रिखीशर, रिख मुन रहे ध्याईआ। गुरसिख वड्डा सतिगुर मिल्या मिल सतिगुर खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क वडयाईआ।

सतिगुर वड्डा घर वड्डी वड्डिआई, वड वड्डा खेल खलाइंदा। गुरसिख वड्डा गुर पकड़े

बांहीं, गुर गुर साचा संग निभाइंदा। दोहां मेला एका थाईं, साचा बंक आप उपाइंदा। इक्क दूजे नूं वेखण चाईं चाईं, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी गोद धर, आपणे गले लगाइंदा।

हरिजन गोदी आपे चुक्क, आपणे नाल मिलाईआ। आप जगाए निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। आपे कढ्ढे वासना खोट, दुरमत मैल धवाईआ। आप वखाए साचा कोट, काया मन्दर गढ़ वडयाईआ । आप वखाए एका ओट, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे संग बन्नाईआ।

गुरसिख संग सतिगुर साथ, सगला संग निभाइंदा। गुरसिख मुसाफर सतिगुर राथ, फड़ बांहों आप चढ़ाइंदा। गुरसिख आरफ़ सतिगुर गाथ, एका मंतर नाम पढ़ाइंदा। गुरसिख तेरी कोई ना करे सिफ़ारश, तेरे अग्गे विष्न ब्रह्म शिव सीस झुकाइंदा। तेरी तेरा सतिगुर बंधाए ढारस, तेरा डेरा कोई ना ढाइंदा। तेरे कोलों राए धर्म ना मंगे कोई आड़त, लेखा चित्रगुप्त ना कोई जणाइंदा। तेरा लेखा लिखे सतिगुर आपणी इबारत, लिख लिख लेखा जगत समझाइंदा। तेरा रूप सच सुच्चा होए ठग्ग बनारस, ठग्गी ठग्गी लेखे पाइंदा। जन्म जन्म जन्म घड़िआ घाड़त, घड़ घड़ भन्न भन्न वेख वखाइंदा। तेरी तेरा गुरसिख सतिगुर आए करन वज़ारत, काया मज़ार इक्क सुहाइंदा। तेरे दवार डौरू वजाए नारद, आपणा नाच इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेला गुरसिख घर, सतिगुर सज्जण लड़ लए फड़, फड़िआ लड़ ना कोई छुडाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दुआरे आए चल , सो दुआरा लोकमात सोभा पाइंदा।

(२२ भादरों २०१८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

३३) गुरमुख तेरी सिफ्त निशानी, लोकमात वखाईआ। पिच्छों सारे गौंदे कहाणी, वेला वक्त सर्ब गवाईआ। पिच्छों सारे पढ़न बाणी, की सतिगुर गया समझाईआ। छाछ विरोलण जगत पाणी, मक्खण हत्थ किसे ना आईआ। धंदे ला ला जाए चार खाणी, आपणी ख़ाहिश ना किसे समझाईआ। गुरमुख लभ्भे सच्चा हाणी, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वडयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। (११—१५०)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

३४) सिख धर्म साची सिक्खी, नानक गोबिन्द वंड वंडाईआ। जिस दी धार सदा अनडिट्ठी, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जिस आत्म परमात्म गोबिन्द पाए भिक्खी, वस्त अमोलक विच्च टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिक्खी दए समझाईआ।

साची सिक्खी चार वरन, नानक निरगुण शब्द जणाया। नेत्र खोल्हे हरन फरन, परदा दूई दए चुकाया। नज़री आए इक्को सरन, दूजा रंग ना कोई वखाया। नाता चुक्के मरन डरन, भय भयानक रूप ना कोई वखाया। सो गुरसिख साची तरनी तरन, जिन्हां नानक निरगुण सतिगुर नज़री आया।

सिक्खी सो परवान, जिन्हां सिखिआ सतिगुर भाईआ। सो सिक्खी कूड़ निशान, दुरमत मैल ना सके धुआईआ। रसना जिह्वा करन ज्ञान, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। जिन्हां अन्तर मिल्या आण, सो सिख रूप वडयाईआ। अनपढ़िआं देवे ज्ञान, पढ़िआं मत दए भुआईआ । गोबिन्द सूरबीर नौजवान, अमृत आत्म साचा जाम पिआईआ। साचा खण्डा देवे किरपान, लोहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। रक्खे काया विच्च मिआन, अठ्ठे पहर बन्द वखाईआ। गोबिन्द गुण गाए वज्जे शब्द धुनकान, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सो गुरमुख गुरसिख चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन सतिगुर सिक्खी नज़री आईआ।

सतिगुर सिक्खी डाहढी निक्की, नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां देवे धुर दरगाहों चिठ्ठी, नाम परवाना हत्थ फड़ाईआ। तिन्हां आपणे नेत्र पेखी, सीस धड़ बन्द बन्द गए कटाईआ। कलिजुग अन्त धीआं पुत्तरां भैणां भाईआं नाल करन हेती, जगत कुटम्ब पालण माया ममता होई हलकाईआ। कूड़ी क्रिया रसना जिह्वा मारन शेखी, बाहरों चिन्न रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू गोबिन्द सिँघ दी वड्डिआए साची सिक्खी, जिस दी धार किसे ना डिट्ठी, धार आपणे विच्च गया छुपाईआ। (१३—४०५ ४०६)

* * * * *

३५) गुरमुख समां सदा चंगा, चंगी तरां समझाईआ। सतिगुर प्रेम जो जन रंगा, रंगत इक्क चढ़ाईआ। ना भुक्खा ना कदे नंगा, जीवण मरन ना कोई वडयाईआ। अठ्ठे पहर इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्च समाईआ। घर विच्च घर चढ़ाए साचा चन्दा, सूरज चन्द मुख शरमाईआ। तोड़णहारा बन्दीख़ाना बन्दा, जिस जन आपणी बन्दगी दए समझाईआ। गुरसिख कदे ना होवे गंदा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहण ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को गाए छन्दा, मिल मिल सखीआं मंगल गाईआ। गुरसिख गुरमुख सन्त सुहेला सदा ठंडा, अगनी तत्त ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, समां मनमुखां उत्ते लगाईआ।

गुरमुख समां सदा सोहणा, सोहणी रुत्त वखाईआ। मिल सतिगुर कदे ना रोणा, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। गुर का शब्द साचा गौणा, गा गा खुशी वखाईआ। ग़फ़लत विच्च कदे ना सौणा, सोवत जागत इक्को रंग वखाईआ। आपणे घर विच्च आपणा सतिगुर पौणा, बाहर लभ्भण कोई ना जाईआ। देवणहारा ठंडी पौणा, पवण उणंजा सेव लगाईआ। कट्टणहारा अवणा गवणा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा समां, सो गुरसिख ना होए निकम्मा, निज घर आपणे आपणी खुशी मनाईआ ।(१३—४११)

३६) गुरसिख भुल्ल वड्डी होई परवान, सतिगुर आपणी झोली पाईआ। गुरसिख जगत भुल्लिआ जहान, नेंह सतिगुर नाल लगाईआ। गुरसिख दी भुल्ल लक्ख चुरासी विच्चों प्रगट कीता ज्ञान, घर परमात्म मेल मिलाईआ। गुरसिख वड्डी भुल्ल घर पाया पुरख सुजान, छड्डी जगत लोकाईआ। गुरसिख वड्डी भुल्ल होई चतर सुघड़ सुजान, जिस आपा तज परमात्म गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां दी गुरसिक्खी भुल्ल, धुर दी लिखी रक्खे अडुल, आपणे लेखे लए लगाईआ।

एह भुल्लां दी वड्डी राणी, जेहड़ी शब्द मिलावे हाणी, घर साचे सोभा पाईआ। सतिगुर दी सुणावे अकथ्थ कहाणी, वेद पुरान कहण ना पाईआ। जिस दी चार बाणी बणी सवाणी, सो साहिब मेल मिलावा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख भुल्ल अमृत देवे ठंडा पाणी, तृस्ना भुक्ख गवाईआ।

भुल्ल कहे मैं बड़ी वड्डी, गुरमुख जगत नालों भुलाया। कूड़ी वासना विच्चों कढ्ढी, माया ममता मोह चुकाया। आपणा नाम पंज तत्त वसाया हड्डीं, रत्त नाड़ी मास रंग रंगाया । कर जोत प्रकाश डूंघी खड्डी, अन्ध अन्धेर गवाया। मैं भगतां घर आई सद्दी, सद्दा सतिगुर नाम सुणाया। नौं दवारे कर के पार हद्दी, सुखमन टेडी बंक डूंघी भवरी डेरा ढाइआ। आसा तृस्ना माया ममता छड्डी, जगत विकार नाता तोड़ तुड़ाया। भुल्ल के सवाणी मिली शब्द हाणी गुरसिख आत्म सेज बहि के सजी, घर आपणा कन्त पाया। प्रेम प्यार अंदर बध्धी, मत मतवाली होई नैण शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाया आपणा घर, तिस लेखा लेखे लए लगाया। (१३—७४४)

३७) गुरसिख गुर तेरा विचोला। हरि शब्द लिखाए ना रक्खे उहला। पंचम जेठ बेमुखां खोल्हे पोला। एका शब्द सृष्ट सबाई रसना गाए सोहँ ढोला। एका शब्द विच्च पवण चलाए, चार वरन झुलाए एक झोला। साचा सीस हरि जगदीस, मिटाए बीस इक्कीस, गुरसिख सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा गुर ना कोई जाणे दुहेला।

साचा गुर सच दरबारी। परम पुरख आप निरँकारी। गुरमुख गुरसिख सोहण चरन दुआरी । सृष्ट सबाई करे पनहारी। आपणे आप रखाए वड्डी इक्क सिकदारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड शाहो चिट्टे असव असवारी। (१६ चेत २०१० बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

३८) गुरसिख सदा हरि रंग माणे। गुरसिख चले गुर के भाणे। गुरसिख गुर जिउँ बाल अंञाणे। गुरसिख सिख दोए एक समाने। गुरसिख गुर चरन लाग सभ तर जाणे। गुरसिख गुर समाणे। गुरसिख गुर विच्च बबाण बिठाणे। गुरसिख गुर गुरपुरी लै जाणे। गुरसिख सद गुर मन भाणे। गुरसिख जगत प्रभ वड्डिआणे। गुरसिख बिन कोई ना गुर पछाणे। गुरसिख उपजे सदा ब्रह्म ज्ञाने। गुरसिख दरस गुर घर में पाने। गुरसिख संग बेमुख तर जाणे। गुरसिख चन्दन वांग सदा महकाणे। गुरसिख होए गुर दी बाणे। गुरसिख मुकाए आवण जावणे। गुरसिख सदा अट्टल हो जाणे। गुरसिख गुर विच्च समाणे। गुरसिख गुर पूरे विच्च जोत मिलाणे। गुरसिख महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग आ के सिख तराणे। (२२ जेठ २००७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

३९) धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग हरि नाम चितारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग गुर चरन निमस्कारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां गुर दरस मानस जन्म सवारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग होवे जोत उजिआरया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग मिले प्रभ अपर अपारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग मिले प्रभ निराधारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग दरस मिले बनवाल्या। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग मिले कृष्न मुरारया । धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां कलिजुग देवे दरस महाराज शेर सिँघ निरंकारया। धन्न धन्न गुरसिख, जिन्नां सोहँ शब्द कलिजुग रसना उच्चारया।

सोहँ शब्द उत्तम ज्ञान। बूझे सो जो पुरख सुजान। पावे सो जिस गुर चरन ध्यान । गावे सो जिस प्रभ देवे दान। धारे सो जिस प्रभ दे दयावान। दरसाए सो जिस प्रभ होए मेहरवान। पावे सो जिस महाराज शेर सिँघ दरस दिखान। (१६ हाढ़े २००७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

४०) भगत जन सो, जो दरस सुहंदे। भगत जन सो, जो कल तरंदे। भगत जन सो, जो कर दरस सरन पड़ंदे। भगत जन सो, जो जिस बख्शे जन आप बख़शिंदे। भगत जन सो, मिल साध संगत जन दुतर तरंदे । भगत जन सो, जन पाया मुरार मनोहर मुकन्दे। भगत जन सो, आत्म रस निझरों झिरंदे। भगत जन सो, कँवल नाभ अमृत बूंद मुख चुविंदे। भगत जन सो, जिन प्रभ दस्म दुआर खुलिंदे। भगत जन सो, जो कलिजुग साध संगत मिल बहिंदे। भगत जन सो, जो निहकलंक दरस करिंदे। भगत जन सो, जिन महाराज शेर सिँघ मिले प्रभ गोबिन्दे। (२ विसाख २००८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

४१) प्रभ पूरा पहले तोल के, फिर बण प्रभ का चेरा। सच रसना बचन बोल के, गुरसिख भुल्ल ना जाए मेरा। साचा शब्द दे प्रभ खोलु के, मध मास ना आवे नेरा। प्रभ मारे जगत वरोल के, भंग करे बचन जन केरा। नाम सच मोती जगत वरोल के, विच्च संगत गुर लाए डेरा। मुखों कहन्दा सति बोल के, कलिजुग डोले ना सिख मेरा। जे जगत भुलेखा भुल्लणा, गुरसिख ना बणना। जे पूरे तोल ना तुलणा, दुःख मदि मास दा जरना। जे कलिजुग नहीं जे रुलणा, गुर चरन लाग कल तरना। महाराज शेर सिँघ अडोल कदे नहीं डुलणा, गुरसिख अडोल जगत विच्च करना। गुरसिख गुरमुख एक रूप, विच्च प्रभ जोत जगाई। सिख हो के विच्च कलिजुग, प्रभ नाउँ कलंक ना लाइणा। (१५ चेत २००८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

४२ गुरमुख सो जन, जिन प्रभ पाया। गुरसिख सो धन्न, जिस प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख सो जन, कलिजुग कल अन्धेर रखाया। गुरमुख सो जन, जोत सरूप जिस प्रभ दरस दिखाया। गुरमुख सो जन, अनहद राग, कन्न सुणाया। गुरमुख सो जन, नेत्र पेख महां सुख पाया। महाराज शेर सिँघ प्रभ साचा मन्न, भरम भुलेखे जीव क्यों मानस जन्म गवाया । (६ जेठ २००८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

४३) गुरमुख हरि का नाम जप, होए उत्तम मुख। गुरसिख हरि का नाम जप, पाए कलिजुग सुख। कलिजुग गुरसिख वड्डा तप, गुर चरन लाग मन लाहे भुक्ख। गुरमुख सोहँ नाम जप, महाराज शेर सिँघ देह गवाए दुःख।

गुरसिख हरि रंग माण, इक्क मन होए इक्क चित। गुरसिख हरि रंग माण, वक़त हत्थ ना आवे कित। गुरसिख हरि रंग माण, बाज़ी जन्म मरन दी जित्त। गुरसिख हरि रंग माण, प्रभ प्रगटे बिन वार थित। गुरसिख हरि रंग माण, प्रभ की जोत प्रगटे धाम साचे नित । गुरसिख प्रभ पूरा पछाण, छड्ड कुटंब वाला हित। गुरसिख सोहँ शब्द जाण, बिन शब्द कल थुक्कां पईआं तित्त । महाराज शेर सिँघ सतिगुर वखाण, जोत जगावे पारब्रह्म अचुँत। (२३ चेत २००८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

४४) गुरसिख तेरा नाम, प्रभ आप वडिआया। गुरसिख तेरा नाम, सतिजुग मुख रखाया । गुरसिख तेरा नाम, चार वरन विच्च जगत चलाया। गुरसिख तेरा नाम, साची बाणी विच्च लिखवाया । गुरसिख तेरा नाम, जुग चार अटल रखाया। गुरसिख तेरा नाम, ना मिटे जगत

मिटाया । गुरसिख तेरा नाम, जुग चार साचा राह दिसाया। गुरसिख तेरा नाम, साध सन्तन विच्च वडिआया । गुरसिख तेरा नाम, अचुत पारब्रह्म रसनी गाया। गुरसिख तेरा नाम, मोहण माधव कृष्न मुरारी जगत उधारी सच लेख लिखवाया। गुरसिख तेरा नाम, खण्ड ब्रह्मण्ड विच्च धराया। गुरसिख तेरा नाम, करोड़ तेतीस रसना गाया। गुरसिख तेरा नाम, इन्दर सभा विच्च वडिआया । गुरसिख तेरा नाम, सुण ब्रह्मा ब्रह्म लोक छड्ड प्रभ चरनीं सीस झुकाया। गुरसिख तेरा नाम, विच्च अकाश वडिआया। गुरसिख तेरा नाम, वांग सवरन उजल कराया। गुरसिख तेरा नाम, रागाँ वेदां विच्च लिखवाया। गुरसिख तेरा नाम, शिव शंकर सभ सलाहिआ। गुरसिख तेरा नाम, कलिजुग उत्तम कराया। गुरसिख तेरा नाम, जगत सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ देवे वड्डिआई, निहकलंक होए जिस शब्द चलाया। (१५ विसाख २००८)

* * * * *

४५) गुरसिख कर्म विचार प्रभ, शब्द सुरत धर आत्म जंदर। गुरसिख जोत अकार कर, साची जोत जगाए विच्च देह मन्दर । बेमुख दुष्ट दुराचार नर, साचे दर नाचे जिउँ बन्दर। गुरमुख पूरब विचार कर, साचा प्रभ वसे तेरे अंदर। मानस जन्म कल सवार कर, सोहँ शब्द धर झूठे मन्दर। (१७ हाढ़े २००८)

* * * * *

४६) गुरसिख प्रभ दरस दिखाया। गुरसिख प्रभ आप वडिआया । गुरसिख प्रभ होए सहाया । गुरसिख प्रभ साचे दी साची छाया। गुरसिख सोहँ देवे प्रभ साची माया। गुरसिख गुर चरन धूड़ गुर दर नुहाया। गुरसिख रंग गूढ़ प्रभ दर चढ़ाया। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बांहों पकड़ आण तराया।

गुरसिख आप तारे। गुरसिख आप काज सवारे। गुरसिख प्रभ पार उतारे। गुरसिख सोहे गुर चरन दुआरे। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरे तेरे भंडारे।

गुरसिख देवे साची मत। गुरसिख देवे प्रभ सोहँ साचा यत। गुरसिख आत्म विच्च एका देवे शब्द तत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखावे तेरी पत।

गुरसिख प्रभ धीर धराई। गुरसिख अमृत आत्म सीर पिलाई। गुरसिख अखीरन अख़ीर प्रभ मिल जाई। गुरसिख वेले अन्त प्रभ जोत समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाई।

गुरसिख प्रभ जोत मिलाया। गुरसिख प्रभ पार कराया। गुरसिख प्रभ तारन आया।

बेमुख प्रभ दर दुरकाया। गुरसिख प्रभ चरन लगाया। गुरमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाया।

गुरसिख दर परवाना। गुरसिख गुर घर साचा जाणा। गुरसिख अवतार नर वाली दो जहानां। गुरसिख सरन पर आप मुकाए आवण जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जोती जोत मिलाना।

गुरसिख मेल मिलाया। गुरसिख अचरज खेल प्रभ दिखाया । गुरसिख सज्जण सुहेल तेरा होए सहाया। गुरसिख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर तेरे हत्थ टिकाया । गुरसिखां सिर हत्थ टिकाए। कलिजुग ना लाए तत्ती वाए। प्रभ साचे दी सच्च सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। (१८ जेठ २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

४७) गुरसिखां गुर सुणे पुकारा। गुरसिखां प्रभ सद सद रक्खे प्यारा। गुरसिखां देवे साचा नाम अधारा। गुरसिखां प्रभ साचा सच करे विहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारा।

गुरसिख माण दवाए। गुरसिख तारनहार अखवावे। गुरसिख बेड़े बंन्न वखावे। गुरसिख जाणी जाण प्रभ दरस दिखावे। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरनी लगावे।

सरन लागे भाग जागे। प्रभ साचा कल पकड़े वागे। मानस जन्म ना लागे दाग़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख सवाए गुरमुख साचे प्रभ दर जागे।

गुरसिखां प्रभ जगाया। बेमुखां प्रभ सुलाया। गुरसिखां प्रभ वडिआया। बेमुखां प्रभ भुलाया। गुरमुखां प्रभ दया कमाया। बेमुखां प्रभ नष्ट कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत तीजी वार विच्च दिल्ली शब्द लिखवाया।(१८ जेठ २००६)

४८) गुरमुख साचा आप बणाए। गुरमुख साचा आप तराए। गुरमुख साचा आप वड्डिआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच्च समाए।

गुरमुख साचे सच घर पाया। गुरमुख साचे प्रभ डेरा लाया। गुरमुख साचे दर दरबान बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत चौथे जुग सवरन माण दवाया।

गुरसिख तेरी धन्न कमाई, दर साचे प्रभ सेव कमाई। गुरसिख तेरी धन्न कमाई,

साची धुन आप उपजाई। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, जोत सरूप प्रगट जोत आत्म जोत करे रुशनाई। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, एका धुन साची अनहद आप उपजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच्च मात देवे वड्डिआई। (१५ सावण २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

४६) गुरमुख प्रभ तारनहारा। गुरसिखां प्रभ करे प्यारा। गुरमुखां देवे शब्द अधारा। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप पावे सारा।

गुरमुखां देवे नाम निधान। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान। गुरमखां देवे आत्म ध्यान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

गुरमुखां तारे प्रभ समरथ। गुरसिखां रक्खे दे कर हत्थ। गुरमुखां चढ़ाए सोहँ साचे रथ । गुरमुखां लेख लिखाए प्रगट जोत निहकलंक आपे आप विच्च मथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जुगो जुग अकथ्थ। (१४ भादरों २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

५०) गुरसिखां प्रभ माण दवाए। गुरसिखां प्रभ आण तराए। गुरसिखां प्रभ तृखा मिटाए। गुरसिखां प्रभ आत्म दिशा खुल्ह़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत जगाए। गुरसिखां प्रभ आप जगाया। गुरसिखां प्रभ आप उठाया।

गुरसिखां प्रभ गुर संगत बणाया। गुरसिखां प्रभ अंग अंग संग संग आप समाया । गुरसिखां आत्म नाम रंग इक्क चढ़ाया । बेमुखां प्रभ नंग कराया। मानस जन्म भंग कराया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दे गुरसिखां वडिआया।

गुरसिखां प्रभ तारनहारा। गुरसिखां देवे शब्द अधारा। गुरसिखां करे जोत अकारा । गुरसिखां विच्च प्रभ सद पसारा। गुरसिखां एका एक अकारा। गुरसिखां देवे जोत सरूपी पवण शब्द हुलारा। गुरसिखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप सद खड़ा रहे आत्म दर दुआरा। (४ कत्तक २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

५१) गुरसिख तारे कर्म विचार। गुरमुख तारे भरम निवार। गुरसिख तारे आत्म तोड़ सर्ब हँकार। गुरसिख तारे हउमे ममता आत्म मार। गुरसिख तारे आपे देवे चरन प्यार । गुरसिख तारे जो आए भुल्ल रुल जन चरन दवार। गुरसिख तारे आप उतारे सिरों पापां भार । गुरसिख तारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म जाए सुधार।

गुरसिख तारे देवे साची मत। गुरसिख तारे आप धराए धीरज यत। गुरसिख तारे सोहँ बिजाए साचे वत। गुरसिख तारे चरन प्रीत निभावे साचा नत। गुरसिख तारे शब्द सरूपी देवे साचा तत्त। गुरसिख तारे आपे देवे साची मत। गुरसिख तारे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे अन्तम पत। (१ माघ २००६)

* * * * *

५२) हरिजनां हरि नाम धिआया। हरिजनां हरि मंगल गाया। हरिजनां हरि रिदे वसाया। हरिजनां हरि नव निध उपजाया। हरिजनां हरि कारज सिद्द आप कराया । हरिजनां हरि मन तन विधे, सोहँ तीर चलाया। हरिजनां आप बणाए बिधे, शब्द सरूपी मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजनां दे विच्च समाया।

हरिजन हरि का रूप। हरिजन सति सरूप। हरिजन हरि एका रूप। हरिजन जन हरि एका सूत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए डर जमदुत।

जन जन हरि हरि के भाए। हरि हरि नाम धिआए। जन हरि हरि सोहँ रसना गाए। जन हरि हरि सद रिदे वसाए। जन हरि हरि हरि कर भव सागर बेड़ा पार तराए। जन हरि हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए एका थां बहाए।

हरिजन हरि विच्च समाणा। हरिजन हरि तेरे विच्च टिकाणा । जन हरि हरि जन हरि आपणा आप पछाणा। हरिजन जन हरि साचा वेख जोत सरूप हरि भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दीसे सच टिकाणा।

हरिजन हरि धिआए। हरिजन हरि गाए। हरिजन अमरा पद पाए। हरिजन हरि सद घर लै जाए। हरि जन दिवस रैण सद छन्द हरि के गाए। जन हरि हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग रखाए।

हरिजन हरि का मीत। हरि जन हरि एका रीत। हरिजन हरि साची चरन कँवल प्रीत । हरि जन हरि चरन लाग जाए जन्म जीत। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया करे सीत।

हरिजन हरि का प्यारा। हरिजन गाए हरि दवारा। हरिजन पाए मोख दुआरा। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे शब्द भण्डारा।

हरिजन हरि रंग राता। हरिजन हरि आप पछाता। हरिजन हरि पित माता। हरिजन हरि इक्क रंग रंगाता। हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद आपणे रंग समाता ।

जन हरि हरि रंग रंगिआ। जन हरि साचा दरस दान दर मंगया। जन हरि साचे घर मूल ना संगिआ। जन हरि वेले अन्त खुल्हे दर, सच दरगाहे लंघिआ। जन हरि चुक्किआ डर गया घर, प्रभ बिठाए जोती सच पलंघिआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजनां सद अंगे संगिआ।

हरिजन तेरी वड्डिआई। हरिजन हरि मित गत कहण ना पाई। हरिजन हरि इक्क चित धिआई। हरिजन हरि इक्क मित बणाई। हरिजन हरि नित दर्शन पाई। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा होए आप सहाई।

हरिजन हरि भगती घाल। हरिजन हरि लेवे भाल। हरिजन हरि लए संभाल। हरिजन होण ना देवे विन्गा वाल। हरिजन हरि आप चलाए साची चाल। हरिजन हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रिहा विच्च समाल।

हरिजन तेरी उत्तम मत। हरिजन तेरा उत्तम तत्त। हरिजन तेरा साचा यत। हरि जन उत्तम मत। हरिजन तेरा साचा सति। हरिजन तेरा साचा वत। हरिजन हरि सोहँ बीज देवे आत्म साचे वत्त। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक रखावे चरन साचा नत्त।

हरिजन हरि साचा मन्नणा। हरिजन बेड़ा आपणा कलिजुग बन्नणा। हरि जन काया नाम मजीठी रंगणा। हरिजन हरि सद एका रंगणा। जन हरि हरि दरस दर सदा मंगणा । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा मूल ना संगणा।

हरिजन हरि रसना गाओ। हरिजन अमृत फल सोहँ दर ते पाओ। हरिजन एका रंग हरि हो जाओ। हरिजन भुक्ख नंग हरि जप कटाओ। हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गाओ।

हरिजन सद रसना गावणा। हरिजन पतित पुनीत आप हो जावणा। हरिजन सद सद चीत हरि वसावणा। हरिजन साचा मीत हरि अखवावणा। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संग आप निभावणा।

हरिजन सद साचा संगे। हरिजन हरि देवे दान, जो जन मूंहों मंगे। हरिजनां हरि देवे माण, आप लगाए आपणे अंगे। हरिजनां हरि मिल्या मेहरवान, सदा इक्क रंगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा दरस दान मंगे। (१ माघ २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

५३) गुरमुख जाग वक्त सुहेला। गुरमुख जाग ना रहे जगत अकेला। गुरमुख जाग प्रभ अबिनाशी विछड़यां आप कराए मेला। गुरमुख जाग आत्म धो दाग़, हत्थ ना आवे वेला । गुरमुख जाग दर साचे भाग सुण साचा राग बण साचा सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बण गुरसिख साचा चेला।

गुरसिख जाग वक्त विचार। गुरमुख जाग वेला अन्त ना हार। गुरमुख जाग प्रभ चरन लाग आत्म आपणी आप सुधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जाए तार। गुरसिख जाग चरन प्यार। गुरसिख जाग प्रभ साचे दी साची कार। गुरसिख जाग प्रभ साचा सच अवतार। गुरसिख जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर हरि का दुआर। (१६ चेत २०१०)

* * * * *

५४) साची मत शब्द गुर मंतर, एका एक दृढ़ाया। सच बसन्तर लग्गी बसन्तर, ना सके कोई बचाया। हरि बिन कोई ना जाणे अन्तर, गुर पूरा होए सहाया। वेस वटाए जुगा जुगन्तर, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा शस्त्र, शस्त्र धारी नाम धराया।

शस्त्रधारी साचा खण्डा, पंज तत्त शंगारया। पहले वंडाई आपणी वंडा, पंचम मोह चुका रिहा। दूजे मेट भेख पखण्डा, साची सिख्या इक्क समझा रिहा। तीजे गुरसिख नेत्र होए ना अन्धा, अठ्ठे पहर दरस दिखा रिहा। चौथे वेखे विच्च ब्रह्मण्डा, आपणा नाम धरा रिहा। पंजवें बणया आपे खण्डा, गुरमत एह जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महीना चेत्र पहली विसाखी रुत्त सुहा रिहा।

गुरमुख तेरी साची मत, गुर पूरे आप बंधाईआ। तुट ना जाए तेरा यत, कोटन कोट पद्मनी नाच कराईआ। तेरी काया तन ना उबले रत्त, नौं अठारां वेख वखाईआ। तेरी धीरज मेरा चरन हठ, ना किसे कोई तुड़ाईआ। धुरदरगाही करां अकट्ठ, राह विच्च ना कोई अटकाईआ। मानस जन्म ना होए भट्ठ, गुर गोबिन्द जो रिहा धिआईआ। मेल मिलावा नट्ठ नट्ठ, चार वरनां कर कुड़माईआ। लहणा देणा चुकावां तीर्थ अठ्ठ सठ, अमृत आत्म ताल भराईआ। एका पूजा एका पाठ, वाहेगुरू फतहि गजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला सैहज सुभाईआ।

हत्थी कंगन तन शंगार, गुर पूरे आप बंधाया। बंधन पाए अपर अपार, जीव जंत ना कोई तुड़ाया। गुरसिख ना होए ठग्ग चोर यार, दूसर धन ना कोई चुराया। दो हत्थां रक्खे साझां यार, एका वंड वंडाया। ग़रीब निमाणयां पावे सार, साचा खण्डा लए चमकाया । जो जन ढैह पए दवार, फड़ बांहों गले लए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दिता साचा वर, गुर संगत रिहा सुणाया।

साचे केस दस दस्मेस, धुर दी पार कराईआ। सीस बैठ हरि जगदीस, तेरा पड़दा पाईआ। तेरी करे ना कोई रीस, तेरा लेख ना कोई लिखाईआ। तेरी कीमत पाए बीस बीस, दूर दुराडा बैठा राह तकाईआ। तेरे छत्तर झुलाए सीस, आपणे हत्थ आप उठाईआ। जगत विकारा जाए पीस, गुरमुखां रिहा समझाईआ। गुरसिखां नाता छड्डना राग छतीस, मन काविआ करे पढ़ाईआ। बुद्धि बणाए आपणी हदीस, गुरमत दए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, गुरमत गुर रिहा सुणाईआ।

साचा कन्घा बत्ती दन्द, मक्खू मुख लगाया। सीस जगदीस चढ़या चन्द, आपणे हत्थ टिकाया। खुशी कराए बन्द बन्द, दुरमत मैल गवाया। आत्म उपजे परमानंद, जिस जन आपणी केसी वाहिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म जणाया।

पंचम धार नाता, पंचम रिहा जणाईआ। तन रखाए बस्तर छाता, बसतर शस्त्र आप सजाईआ। धीरज जत पाए काछा, कामन नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दिसे साचा घर, साची सिख्या इक्क सिखाईआ।

साची रीत गुर दस्तार, शब्दी चीर बंधाया। पाई तन हरि कटार, गुर गोबिन्द वेख वखाया। कंघा केस कर प्यार, दोए मेल मिलाया। दस दसमेसा ख़बरदार, सोए रिहा जगाया। गणपत गणेशा ना कोई पूजे गुरमुख विचार, पुरख अकाल इक्क मनाया। आपणा आप कर त्यार, गुरसिख साचा त्यार कराया। आपणी रक्खया कर विच्च संसार, दे मत आप समझाया। आपे ढैह पिआ दुआर, गुरमुखां अग्गे झोली डाया। पंचम सेवक होया सेवादार, मुख अमृत आप चवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत वेला रिहा सुहाया।

जिउँ भावी तिउँ भावना, हरि करन करावण जोग। दूती दुष्ट खपाए जिउँ रामा रावणा, गुरमुख मेला धुर संजोग। नेत्र बख्शे साचा चानणा, आत्म रस साचा भोग। गुरसिख तेरा ब्रह्म ज्ञानणा, एका पढ़ना सच सलोक। मेरा तेरा रूप एका जानणा, मेरी तेरी इक्क दुआरे मोख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपे जाणे आपणा हरख़ सोग। (०७—३८५ ३८६)

* * * * *

५५) पुरख अकाल रक्खणी ओट, दूसर अवर ना कोई वडयाईआ। इष्ट रखौणा निर्मल जोत, निरवैर इक्क धिआईआ। शब्द बणाए किला कोट, हरिजन साचे लए वसाईआ। झूठी कढ़ुणी वासना खोट, माया ममता मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत रिहा समझाईआ। (०८ - ८५२)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

५६) घर बहणा दरसन नैणा, मुखड़ा नूर नूर दरसाईआ। गुरसिख मन्नणा गुर का कहणा, भुल्ल कदे ना जाईआ। साध संगत विच्च मिल के बहणा, हरि संगत हरि का रूप वखाईआ । गुर चरन प्रीती साचा गैहणा, जगत शिंगार ना कोई वडयाईआ। आदि अन्त भाणा सहणा, हरि भाणे विच्च समाईआ। आपे देवे लहणा देणा, पूरब लेखा झोली पाईआ। आदि अन्त भगत भगवन्त धाम इक्ठे रहणा, एका सेजा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ।

हरिजन सज्जण रहणा त्यार, जगत त्यारी आप कराइंदा। आपे मेला करे मेलणहार, मिल मिल आपणे अंग लगाइंदा। घर घर दर दर पावे सार, गृह गृह वेख वखाइंदा। सुरती सुरत लए उठाल, जगत निमाणी आप जगाइंदा। हाणी हाणी मेली गुर करतार, शब्दी शब्द बंधन पाइंदा। मन्दर वखाए इक्क दुआर, सच दुआरा आप वडिआइंदा। गुरसिख भुल्ल ना जाए विच्च संसार, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोई लगाइंदा। निहकलंक नरायण नर लए अवतार, चार जुग दे विछड़े मेल मिलाइंदा । लक्ख चुरासी विच्चों लए निकाल, निक्का वड्डा बिरध बाल ना वंड वंडाइंदा। आप आपणयां करे आप संभाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। सदा सदा सदा प्रितपाल, प्रितपालक वेख वखाइंदा। गुरसिख चले तेरे नाल नाल, चलणहारा दिस ना आइंदा। पावे सार शाह कंगाल, जगत कंगाली आपणी झोली पाइंदा। आप मुरीदां सुणे हाल, आपणा हाल मुरीदां आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे लए वर, घर साचे आप बहाइंदा।

गुरसिख वसणा हरी दुआर, हरि मन्दर आप बणाया। झूठा नाता सर्ब संसार, हउमे रोग रिहा सताया। घर घर दिसे जगत विभचार, नार हरि कन्त ना कोई हंढाया। सुरती शब्द ना करे प्यार, रसना जिह्वा काग रही कुरलाया। मन उपजे ना कोई वैराग, जगत तृसना मूल रखवाया। जिस जन तेरा साजन लिआ साज, सो साहिब क्यों मनो भुलाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रक्खे लाज, जन भगतां रखदा आया। कलिजुग अन्तम मारी इक्क अवाज़, सोहँ ढोला गाया । हँ ब्रह्म पारब्रह्म निरगुण सरगुण रचिआ काज, नारी कन्त रूप वटाया। वडि भागण मिल्या कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहला नज़री आया। जगत रसना मेटे सर्ब सवाद, आत्म रस एका पाया। जिस सृष्ट सबाई उपाई आदि, अन्तम आपे वेखण आया। जिस नूं गाउँदे ब्रह्म ब्रह्माद, सो पुरख निरँजण रूप धराया। जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव करदे याद, बैठे सीस झुकाया। जिस अग्गे गुर अवतार करन फ़रयाद, सो माही आपणा खेल रिहा कराया। जिस दी बाणी बोध अगाध, जस वेद पुरान गाया । सो पुरख गुरसिखां करे सच्चा लाड, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आया। आपे माई आपे बाप, गुरसिख पिता पूत गोद सुहाया। गुरसिखां दी रक्खी आप याद, घर घर दर दर जा जा रिहा उठाया। भुल्ल ना जाए पूरब जन्म दा कीता लाड, जन्म जन्म कर्म कर्म धर्म धर्म आपणे हत्थ रखवाया। कलिजुग अन्त गुरमुख सच्चा सन्त साध, जिस जन आपणे

चरन लगाया। चार कुण्ट वेखे वाद विवाद, विख अमृत रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे एका दान, अन्तम आसा पूर दए कराया। (१०—६३५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

५७) गुरसिख सो जिस कर्म विचारया। गुरसिख सो जिस शब्द उधारया। गुरसिख सो जिस पारब्रह्म निमस्कारया। गुरसिख सो जिस हउमे रोग निवारया। गुरसिख सो जो डिग्गे चरन दवारया। गुरसिख सो जिन मिल्या नाम भंडारया। गुरसिख सो जिस रसना सोहँ शब्द विचारया। गुरसिख सो जिस जगाए जोत प्रभ अपर अपारया। गुरसिख सो जिन मिल्या प्रभ निराधारया। गुरसिख सो जिस महाराज शेर सिँघ चरन कँवल पिआरया।
(२० जेठ २००७ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

५८) गुरसिख सदा हरि रंग माणे। गुरसिख चले गुर के भाणे। गुरसिख गुर जिउँ बाल अंञाणे। गुरसिख सिख दोए एक समाने। गुरसिख गुर चरन लाग सभ तर जाणे। गुरसिख गुर समाणे। गुरसिख गुर विच्च बबाण बिठाणे। गुरसिख गुर गुरपुरी लै जाणे। गुरसिख सद गुर मन भाणे। गुरसिख जगत प्रभ वड्डिआणे। गुरसिख बिन कोई ना गुर पछाणे। गुरसिख उपजे सदा ब्रह्म ज्ञाने। गुरसिख दरस गुर घर में पाने। गुरसिख संग बेमुख तर जाणे। गुरसिख चन्दन वांग सदा महकाणे। गुरसिख होए गुर दी बाणे। गुरसिख मुकाए आवण जावणे। गुरसिख सदा अट्टल हो जाणे। गुरसिख गुर विच्च समाणे। गुरसिख गुर पूरे विच्च जोत मिलाणे। गुरसिख महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग आ के सिख तराणे।

सेवक सिख सभ गुर तारया। विच्च चरन जिन आ निमस्कारया। मिले आप परवरदिगारया। कट्टी फास दरस दरसारया। होए सुखाले सास, रसना सोहँ शब्द उच्चारया। घर प्रगट गुण निधान, ऐसे गुर को सद सद सद बलहारया। गुर दे दरस अपार, गुरसिख आ तारया। तत्ती वाउ ना लग्गे, पारब्रह्म जिन रिदे चितारया। होए सदा अडोल, जिन्नां नाम निरँजण पा लिआ। रसना मुखों हरि हरि बोल, प्रभ अबिनाश विच्च रिदे धिआ लिआ। प्रभ मिल कोई ना रहे तोट, जगत झूठी खेल रचा लिआ। महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा, कलिजुग आए गुरसिख तरा लिआ।

गुरसिखां घर सदा वधाई, कर प्रेम गुर गोबिन्द प्रगटा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, जिन मातलोक सचखण्ड बणवा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, जिन्नां विष्नूं भगवान विच्च बहा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, हरि हरि हरि दर्शन हरि थाएं पा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, सति सति सति कर सति पा लिआ। गुरसिखां

मन सदा वधाई, गुर चरन लाग बंस तरा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, नाम पदार्थ गुर दर ते पा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, जन्म मरन दा फंद कटा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, दरस परस मन तृप्त कर लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, चरन कँवल दर सीस झुका लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, जोत निरँजण नाम नरायण घर सैहजे पा लिआ। गुरसिखां मन सदा वधाई, महाराज शेर सिँघ गुर सतिगुर पूरा गुरसिखां सिर हत्थ टिका लिआ। गुरसिख कर्म गुर आप वखाणे। गुरसिख भेव कोई जीव ना जाणे। गुरसिख सेव गुर पाए ख़ज़ाने। गुरसिख विच्च गुर अभेव महाराज शेर सिँघ जोत जगाणे। (२२ जेठ २००७ बिक्रमी)

* * * * *

५६) सन्त जनां प्रभ जोत जगाए। सन्त जनां प्रभ विच्च समाए। सन्त जनां प्रभ अमृत झिरना दे झिराए। सन्त जनां प्रभ अमृत रस मुख चुआवे। सन्त जनां प्रभ अमृत झिरना नभ कँवल कँवल नभ मुख चुआवे। सन्त जनां प्रभ जोत सरूपी मेल मिलाए। सन्त जनां प्रभ साचा सति ज्ञान दुआवे। सन्त जनां प्रभ एका दूजा भउ चुकाए। सन्त जनां प्रभ सच घर दी बूझ बुझाए। सन्त जनां प्रभ आपणा भेव आप खुल्ह़ाए। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए।

सन्त जनां प्रभ धीर धराए। सन्त जनां प्रभ साचा आत्म सीर पिलाए। सन्त जनां हउमे विच्चों पीर गुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां धीर धराए।

सन्त जनां प्रभ सरधा पूर। सन्त जनां प्रभ आत्म देवे सति सरूर। सन्त जनां प्रभ आत्म जोत करे नूरो नूर। सन्त जनां प्रभ भण्डार करे भरपूर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ आसा मनसा पूर।

सन्त जनां प्रभ लाज रखाए। सन्त जनां प्रभ माण दुआए। सन्त जनां प्रभ साचा नाम झोली पाए। सन्त जनां प्रभ एका ज्ञान सुरत दुआए। सन्त जनां प्रभ प्रगट जोत जोत सरूप दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए।

सन्त जनां प्रभ दे वड्डिआई। सन्त जनां प्रभ साची भिच्छया पाई। सन्त जनां चरन धूड़ मस्तक लाई। सन्त जनां साची जोत विच्च ललाट जगाई। सन्त जनां ऊँच पदवी प्रभ दर ते पाई। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद दया कमाई।

सन्त जनां प्रभ चरन भरवासा। सन्त जनां प्रभ चरन रहिरासा। सन्त जनां प्रभ करे बन्द खुलासा। सन्त जनां प्रभ करे जोत प्रकाशा। सन्त जनां प्रभ पूर कराए आसा। सन्त जनां प्रभ साचा सद रक्खे विच्च वासा। झूठी सृष्ट वेखे तमाशा। सन्त जनां प्रभ होए दासन दासा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे देवे चरन भरवासा।

सन्त जनां प्रभ सदा संग। एका नाम चढ़ाए रंग। अमृत झिरना झिराए विच्च देह गंग। साचा प्रभ साचा वर साचा दर जन सन्त लिआ मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संग।

सन्त जनां सर्ब गिआता। सन्त जनां एका मिल्या भगवन्त भराता। सन्त जनां प्रभ सदा रंग राता। सन्त जनां अमृत बूंद पीए स्वांत स्वांता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत मिलाता। (२१ माघ २००८ बि)

* * * * *

६०) गुरमुखां गुर कलिजुग लध्धा, घर लागा रंग मुरारा जीउ। गुरसिखां गुर कलिजुग लध्धा, जगत करे उजिआरा जीउ। गुरसिखां गुर कलिजुग लध्धा, गुर देवे नाम भंडारा जीउ। गुरसिखां गुर कलिजुग लध्धा, घर प्रगट अपर अपारा जीउ। गुरसिखां गुर कलिजुग लध्धा, प्रभ देवे भगत भण्डारा जीउ। गुरमुखां गुर कलिजुग लध्धा, गुर करे जगत उजिआरा जीउ। गुरमुखां गुर कलिजुग लध्धा, महाराज शेर सिँघ भगत अद्धारा जीओ।

गुरमुख नाउँ गुर नाम दवाया। गुरसिख निथाविआं थान दवाया। गुरमुख नाउँ सोहँ शब्द जपाया। गुरसिख मन चाओ, गुर चरन सीस झुकाया। गुरमुख मिले हरि ठाउँ, रसना हरि हरि हरि जस गाया। गुरसिख गुर करे पसाओ, प्रगट जोत रूप प्रभ दरस दिखाया। गुरमुखां गुर साचा नाउँ, कलिजुग नाओ गुर बन्ने लाया। गुरसिखां मन गुर का भाउ, कदे ना डोले सिख किसे डुलाया। गुरमुखां सद बल जाओ, सचखण्ड जिन कर्म टिकाया। गुरमुखां दिवस रैण गाओ, जिन्नां महाराज शेर सिँघ चरनीं सीस झुकाया ।

गुरमुखां घर गुर दरबारा। गुरसिखां मन प्रभ जोत अद्धारा। गुरमुखां गुर नाउँ जगत प्यारा। गुरसिखां गुर मिले गिरधारा। गुरमुखां लध्धा, कृष्न मुरारा। गुरमुखां मिल्या शेर सिँघ निरँकारा। निरँकार अछल अडोल प्रभ हरि रंग माणयां। नाउँ रंग मजीठी घोल, गुरसिखां आत्म रंग चढ़ानिआं। प्रभ किसे ना आवे तोल, सद आप जगत तुलानिआं। महाराज शेर सिँघ आप अडोल, सभ जगत डुलानिआं। (२० जेठ २००७ बिक्रमी)

* * * * *

६१) धन्न गुरसिख दया कमाए। धन्न गुरसिख चरन लगाए। धन्न गुरसिख घर जोत प्रगटाए। धन्न गुरसिख हरि हरि हरि नज़री आए। धन्न गुरसिख मुख ऊजल जगत कराए। धन्न गुरसिख लग्गी चरन तोड़ निभाए। धन्न गुरसिख टुट्टी गढ्ढणहार गंढ वखाए। धन्न गुरसिख घट घट रिहा समाए। धन्न गुरसिख कलिजुग जोत घनकपुरी प्रगटाए। धन्न गुरसिख छड्ड देह जोत रूप हो जाए। धन्न गुरसिख अन्त काल कल लए खपाए।

धन्न गुरसिख वाहवा सतिजुग साचा लाए। धन्न गुरसिख सोहँ दे ज्ञान सभ सिख तराए। धन्न गुरसिख रंग रंगीला माधो हरि रंग समाए। धन्न गुरसिख पारब्रह्म परमेशवर अन्तरजामी आप अखवाए। धन्न गुरसिख मोहण माधव कृष्न मुरार जोत प्रगटाए। धन्न गुरसिख अबिनाशी अबगत अगोचर हर थाएं समाए। धन्न गुरसिख कोट जन्म दे विछड़े कलिजुग लए मिलाए। धन्न गुरसिख गुरसिखां देवे तार महाराज शेर सिँघ प्रगट भगत वड्डिआए।

(१६ जेठ २००७ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

६२) धन्न कमाई सन्त जन, हरि रसन ध्याउँदे। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ दर्शन पाउँदे। धन्न कमाई सन्त जन, चरन प्रीत सेव कमाउँदे। धन्न कमाई भगत जन, देवी देव एका पुरख मनाउँदे। धन्न कमाई सन्त जन, मिले वड्डिआई भगत जन, दोवें जोती इक्को गोती, प्रभ अबिनाशी साचा पाउँदे। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म चानण। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या नाम सच्चा दानण। धन्न कमाई सन्त जन, मिले चरन धूड़ इशनानण। धन्न कमाई भगत जन, आत्म जोत जगी होया ब्रह्म ज्ञानण। धन्न कमाई सन्त जन, मिले वड्डिआई भगत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां हत्थीं बंन्हे गानण।

धन्न वड्डिआई सन्त जन, मिल्या हरि सच्चा भरभूर। धन्न कमाई भगत जन, होए आत्म रुशनाई जिउँ कोहतूर। धन्न कमाई सन्त जन, मिले वड्डिआई भगत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां धिरां दी आसा मनसा पूर। (१ विसाख २०११)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

६३) धन्न धन्न धन्न गुरसिख प्यारा। धन्न धन्न धन्न गुरमुख जिस मिल्या सच दवारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस देवे शब्द अपर अपारा। धन्न धन्न धन्न गुरमुख जिस मिल्या अमृत भण्डारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख एका मंगया सच्चा हरि दुआरा। धन्न धन्न धन्न गुरमुख मेल मिलावा साचे कन्त हरि भगवन्त जोत सरूपी निहकलंक नरायण नर अवतारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, मिली साची भिक्ख, मिटे आत्म तिँख, सच लेख प्रभ जाए लिख, तन चाढ़े रंग अपर अपारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, आप उतारे कलिजुग माया लाहे विख। कलिजुग जीवां हत्थ ना आए साचा राह, लभ्भदे फिरदे मुन रिख। गुरमुख साचे सन्त जनां देवे सच्चा धन शब्द बोध अगाधा, साची सिखिआ लैणी सिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे सन्तां, आदि अन्त साचा कन्त हरि भगवन्त देवे निथाविआं थां। (११ चेत २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

६४) धन्न कमाई भगत जन, गुर दर बहंदे। धन्न कमाई सन्त जन, हरि नाउँ ध्यांदे। धन्न कमाई भगत जन, सच कर्म करंदे। धन्न कमाई सन्त जन, हरि नाम रसना दिवस

रैण धिआंदे। धन्न कमाई भगत जन, साचा धर्म विच्च मात चलांदे। धन्न कमाई सन्त जन, हउमे तृष्ना रोग गवांदे। धन्न कमाई भगत जन, प्रेम सितार इक्क वजांदे। धन्न कमाई सन्त जन, दूई द्वैती पड़दा लाहुंदे। धन्न कमाई सन्त जन, आपा विच्चों हउमे रोग गवांदे। धन्न कमाई भगत जन, दुरमत मैल गुर दर गवांदे। धन्न कमाई सन्त जन, रल मिल सखीआं मंगल गाँदे। धन्न कमाई भगत जन, भुल्ले अवगुण हरि दर बख्शांदे। धन्न कमाई सन्त जन, नैण मुधारी रिदे धिआंदे। धन्न कमाई भगत जन, जगत जंजाला आप कटांदे। धन्न कमाई सन्त जन, दे शब्द ज्ञान बेमुखां समझांदे। धन्न कमाई भगत जन, एका ओट हरि रखांदे। धन्न कमाई सन्त जन, शब्द चोट तन वजांदे। धन्न कमाई भगत जन, अंदरों खोट सर्ब गवांदे। धन्न कमाई भगत जन, आत्म दूई द्वैती लगा फट्ट आपणी हत्थीं आप सुआंदे। धन्न कमाई सन्त जन, जूठा झूठा मोह विच मात आपणा आप तजांदे। धन्न कमाई भगत जन, साचा शब्द सुणन कन्न आत्म जाए सभ दी मन्न, एका चरन ध्यान रखांदे। धन्न कमाई सन्त जन, माया ममता जगत जंजाल आपणे तनों लौहुंदे। हरि भगवान देवे वड्डिआई, सन्तां भगतां दोहां मेल मिलान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आया देवे सोहँ सच्चा इक्क ज्ञान।

धन्न कमाई भगत जन, विच मात संसार। धन्न कमाई सन्त जन, गुर चरन करन प्यार। धन्न कमाई भगत जन, एका दिसे शब्द सच्ची धुनकार। धन्न कमाई सन्त जन, एका बैठा सेवा लाए अठ्ठे पहिर रहे धिआए, हउमे रोग सर्ब निवार। धन्न कमाई भगत जन, दोए जोड़ करदे रहण हरि दर तेरे सच्चे घर सदा सदा निमस्कार। धन्न कमाई सन्त जन, एका मंगण साची मंग बण बण जगत भिखार। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म जाए सुधार। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी रसना रिहा उच्चार। धन्न कमाई भगत जन, दूजा शब्द वसाए तन, तीजा आत्म जाए मन, चौथे घर साचा हरि जोत जगाए अपर अपार। धन्न कमाई सन्त जन, भाण्डा भरम देवे भन्न, अग्गे आइण मूल ना संग, साचा देवे शब्द असवार। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई सन्त जन, दोहां बेड़ा देवे बंन्न, निहकलंक नरायण नर अवतार।

धन्न कमाई भगत जन, हरि रिदे विचारे। धन्न कमाई सन्त जनां, कारज करे सिँधे आप करे कराए आप हरि निरँकारे। धन्न कमाई भगत जन, लग्गे चोट एका शब्द तन नगारे। धन्न कमाई सन्त जन, एका रक्खण ओट हरि गिरधारे। धन्न कमाई भगत जन, विच्चों कढुण खोट हउमे चिन्ता रोग निवारे। धन्न कमाई सन्त जन, मंगदे रहण दवारे। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्डिआई सन्त जन देवे सच्चा नाम धन निहकलंक नरायण नर अवतारे।

धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म अनमोल। धन्न कमाई सन्त जन, पूरे तुल्ले तोल । धन्न कमाई भगत जन, वेले अन्त ना जाइण डोल। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ वसे आत्म सदा कोल। धन्न कमाई भगत जन, सोहँ शब्द वजदा रहे अठ्ठे पहर ढोल। धन्न कमाई

सन्त जन, प्रभ आत्म पड़दे देवे फोल। धन्न कमाई सन्त जन, करे कराए आपणे चोहल। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दे अंदर रिहा बोल ।

धन्न कमाई भगत जन, शब्द तूरा। धन्न कमाई सन्त जन, मिले जोती नूरा। धन्न कमाई भगत जन, हरि पाया गहर गम्भीरा। धन्न कमाई सन्त जन, होए शांत सरीरा। धन्न कमाई भगत जन, कट्टे हउमे पीड़ा। धन्न कमाई सन्त जन, बन्ने आपणा बीड़ा। धन्न कमाई भगत जन, चुकाए जगत झेड़ा। धन्न कमाई सन्त जन, आप वसाए काया नगर खेड़ा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ अबिनाशी दिसे नेड़न नेड़ा। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ आत्म रक्खे खुल्ला वेहड़ा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ दर शब्द लैण, रसना कहण धन्न धन्न, अन्त ना मारे करे खुआरे आपे देवे साचा गेड़ा। धन्न कमाई सन्त जन, अन्त ना लग्गे मूल डन्न, इक्को मिले माल नाम धन, मिटे जगत झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आदिन अन्ता गुणी गुणवन्ता बंनूदा जाए बेड़ा।

धन्न कमाई भगत जन, गुर चरन दुआरा। धन्न कमाई सन्त जन, जगे जोत अगम्म अपारा । धन्न कमाई भगत जन, वेखण हरि कन्त सच्चा भतारा। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या नाम सच्चा भंडारा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ प्रगट होए दरस दिखाए वारो वारा। धन्न कमाई सन्त जन, शब्द दात प्रभ झोली पाए बणे आप वरतारा। धन्न कमाई भगत जन, दूजा मंगण ना कोई होर दवारा। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी किरपा कर खोल्हे दसम दवारा। धन्न कमाई भगत जन, एका जोत हरि बलोए दर्शन देवे तीजे लोए आपणा भेव निवारा । धन्न कमाई सन्त जन, नेत्र अवर ना दीसे कोई एका दीसे हरि गिरधारा। धन्न कमाई भगत जन, अन्तम मिल्या हरि करतारा। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म कीआ सच पसारा। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई सन्त जन, दोहां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क सच भतारा।

धन्न कमाई भगत जन, दर साचा मंगण। धन्न कमाई सन्त जन, काया चोली आपणी रंगण। धन्न कमाई भगत जन, दर घर साचे मूल ना संगण। धन्न कमाई सन्त जन, एका तन शिंगार लगाइण सोहँ शब्द साचा कंगण। धन्न कमाई भगत जन, भाण्डा भरम झूठा भन्नण। धन्न कमाई सन्त जन, साचा नाम हरि झोली पाए लग्गे मात ना सन्नूं। धन्न कमाई भगत जन, साचा शब्द हरि उपजाए इक्क सुणाए कन्नन। धन्न कमाई सन्त जन, कलिजुग जीव होए अन्नूं। धन्न कमाई भगत जन, दोवें बण गए सच्चे भाई निहकलंक तैनूं मन्नण।

धन्न कमाई भगत जन, हरि दए दिलासा। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ आप मिटाए आत्म लग्गी तृष्ना पिआसा। धन्न कमाई भगत जन, अन्तम जन्म कराए रैहरासा। धन्न कमाई सन्त जन, लक्ख चुरासी करे विनासा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ अबिनाशी होए

दासन दासा । धन्न कमाई सन्त जन, आत्म वेखण हरि तमाशा। धन्न कमाई भगत जन, जोत सरूपी अंदर बैठा पाउँदा रहे रासा। धन्न कमाई सन्त जन, इक्को दिता सच्चा नाम ना तोला ना मासा। धन्न कमाई भगत जन, इक्को मंगण सच्चा दान अग्गे डाहण काया चोली सच्चा कासा। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी करे बन्द खलासा। धन्न कमाई सन्त जन, धन्न कमाई भगत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दोहां विच इक्को जिहा रक्खे वासा ।

धन्न कमाई भगत जन, हरि हाज़र हज़ूर। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म होए भरपूर । धन्न कमाई भगत जन, पंजां चोरां करना दूरो दूर। धन्न कमाई सन्त जन, सोहँ शब्द रसना गाइण आत्म मिटे गरूर। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दस्से इक्को थां, आपे फड़े दोहां बांह, प्रभ अबिनाशी हाज़र हज़ूर।

धन्न कमाई भगत जन, हरि सच पछाणा। धन्न कमाई सन्त जन, करया गुर चरन ध्याना। धन्न कमाई भगत जन, हरि देवे सच्चा दाना। धन्न कमाई सन्त जन, उपजे ब्रह्म ज्ञाना। धन्न कमाई भगत जन, शब्द सुणाए हरि काना। धन्न कमाई सन्त जन, आप पहनाए दया कमाए शब्द सरूपी चिट्टा बाना। धन्न कमाई भगत जन, मन्नण साचा भाणा। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या हरि भगवाना। धन्न कमाई भगत जन, वड वड्डिआई सन्त जन दोहां दिसे इक्क निशाना।

धन्न कमाई भगत जन, मिल्या सच्चा राह। धन्न कमाई सन्त जन, मातलोक बैठे वेखण साचा थां। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ दर भाणा रहे मन्न कदे ना मुख चों निकले ना। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी रक्खे ठंडी छाँ। धन्न कमाई भगत जन, आपणी गोद उठाए जिउँ बालक मां। धन्न कमाई सन्त जन, दरगाह साची देवे ला साचे नां। धन्न कमाई भगत जन, धन्न वड्डिआई सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दोहां दा आपे बणे पिता आपे मां।

धन्न कमाई भगत जन, हरि साचा दिसे। धन्न कमाई सन्त जन, विच मात वंडाइण आपणे साचे हिस्से। धन्न कमाई भगत जन, बेमुख कलिजुग जीव पिसे। धन्न कमाई सन्त जन, कोई ना करे इस दी रीसे। धन्न कमाई भगत जन, मिटदा जाए भेव बीस इक्कीसे। धन्न कमाई सन्त जन, हरि सोहँ शब्द छत्तर झुलाए सीसे। धन्न कमाई भगत जन, देवे वड्डिआई नाम धन्न, चरन लगाए मूसे ईसे। धन्न कमाई सन्त जन, भेव खुल्ह़ाए साचे तन, एका शब्द सुणाए सपारे तीसे। धन्न कमाई भगत जन, धन्न वड्डिआई सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा नाम दान, आए दर हरि भगवान, हो मेहरवान देवे सच्चा इक्क निशान, साचा गुण निधान छत्तर झुलाए सीसे।

धन्न कमाई भगत जन, हरि मिल्या सज्जण मुरारा। धन्न कमाई सन्त जन, पाइण दरस आत्म अपारा। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या मेल कृष्न मुरारा। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या जोत सरूपी राम अवतारा। धन्न कमाई भगत जन, नेत्र पेखण साचे तन इक्को जोत हरि निरँकारा। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म दीपक जोती होए मात उजिआरा। धन्न कमाई भगत जन, दर आए लेखे लाए मानस जन्म सुधारा। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या पुरख अगम्म अपारा। धन्न कमाई भगत जन, हउमे दुक्खड़ा लाहे भारा। धन्न कमाई सन्त जन, देवे शब्द अपर अपारा। धन्न कमाई भगत जन, मंगण आइण चल दुआरा। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी आपणी हत्थीं बणे आप वरतारा। धन्न कमाई भगत जन, आत्म झोली लैण भराए खुल्लिआ इक्क दुआरा। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या मेल हरि निरँकारा। धन्न कमाई भगत जन, मिले वधाई सन्त जन, दोहां मेल मिलाया इक्को जोती हरि निरँकारा।

धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म सुधारया। धन्न कमाई सन्त जन, हरि पाया अपर अपारया। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म मात सुधारया। धन्न कमाई सन्त जन, सच्चा मिल्या हरि भरतारया। धन्न कमाई भगत जन, देवे सच्चा नाम धन, जोत जगाए साचे तन खोल्हे दसम दवारया। धन्न कमाई सन्त जन, मिले सच्चा नर, आपणी किरपा कर जोत देवे धर करे उजिारया। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्डिआई सन्त जन, दोवें मंगण इक्क दवारया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा धारया।

धन्न कमाई भगत जन, मिल्या सच्चा राह। धन्न कमाई सन्त जन, गलों कट्टिया जम का फाह। धन्न कमाई भगत जन, अग्गे वेखण सच्चा थां। धन्न कमाई सन्त जन, ना कुझ पीण ना कुझ खाण। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्डिआई सन्त जन, दोहां धिरां दा इक्को नां।

धन्न कमाई भगत जन, प्रभ देवे आत्म धीरे। धन्न कमाई सन्त जन, सोहँ शब्द मिल्या साचा सीरे। धन्न कमाई भगत जन, विच्च मातलोक बणे साचे हीरे। धन्न कमाई सन्त जन, इक्क दूजे दे साचे वीरे। धन्न कमाई भगत जन, इक्को चोट शब्द लाए अक्खीं चले नीरे। धन्न कमाई सन्त जन, चलदे रहण धीरे धीरे। धन्न कमाई भगत जन, हरि पाया गहर गम्भीरे। धन्न कमाई सन्त जन, झूठी माया विच्चों काया प्रभ अबिनाशी आपे चीरे। धन्न कमाई भगत जन, इक्क वसाया शब्द तन, हउमे विच्चों कढ्ढी पीड़े। धन्न कमाई सन्त जन, वस्से सच्चे थां, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवान इक्क पिआए अमृत दोहां सच्चा सीरे।

धन्न कमाई भगत जन, हरि सच्चा भालिआ। धन्न कमाई सन्त जन, गलों लाहिआ सूसा कालिआ। धन्न कमाई सन्त जन, तन काया मन्दर आपणा आप सुहा लिआ। धन्न कमाई भगत जन, हरि साचा रिदे वसा लिआ। धन्न कमाई सन्त जन प्रभ अबिनाशी घरों पा लिआ ।

धन्न कमाई भगत जन दीपक जोत आपणा आप जगा लिआ। धन्न कमाई सन्त जन, लाल अमोलक साचा मोती आपणे गले विच अटका लिआ। धन्न कमाई भगत जन, आत्म उठाई कलिजुग सोती, सोहँ रसना गा लिआ। धन्न कमाई सन्त जन, दोहां दी बण गई इक्को गोती, जोती जोत मेल मिला लिआ। धन्न कमाई भगत जन, सृष्ट सबाई रही सोती, हरि जी किसे दिस ना आ रिहा। धन्न कमाई सन्त जन, हिरदे वास रखा रिहा। धन्न कमाई भगत जन, हरि तोड़े जंदर, सोहँ चाबी ला लिआ। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्डिआई सन्त जन दोहां आपणे थां बहा रिहा।

धन्न कमाई भगत जन, तन किआरा। धन्न कमाई सन्त जन, विच्च पंच दूत सोहँ अपर अपारा। धन्न कमाई भगत जन, हल चलाए रसना गाए, सिध्धी राहल इक्क रखाए, अग्गे दिसे सच किनारा। धन्न कमाई सन्त जन, इक्को पाणी आपणी हत्थीं पाइण अमृत साची धारा । धन्न कमाई भगत जन, आत्म सच्चा होए हरया। प्रभ अबिनाशी किरपा करया, मिल्या इक्क दवारा। धन्न कमाई सन्त जन, सोहणी वाड़ी आप लगाई, हाढ़ी साउणी इक्क बणाई, इक्को इक्क आत्म किआरा। जोती जोत सरूप हरि, देवे वड्डिआई भगत जन, साचा फल अन्तम दए खुआई।

जन भगत तेरी धन्न कमाई, आत्म लाया बूटा। सन्त जना नूं दिउ वधाई, इक्को लैण शब्द झूटा। भगत जन तेरी वड वड्डिआई, लक्ख चुरासी आउणा जाणा विच्च मात दे छूट्टा। जन भगत तेरी वड वड्डिआई होए चारे कूटा। धन्न कमाई भगत जन, धन्न वड्डिआई सन्त जन, दोहां धिरां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आपणा नां।

जन भगत धन्न कमाई, आत्म तृखा इक्क रखाई। जन सन्त तेरी धन्न कमाई, इक्को आस चरन रखाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ अबिनाशी दया कमाई। जन सन्त तेरी धन्न कमाई, प्रभ मिलण आया प्रगट जोत कलिजुग अन्तम साचा माही। जन भगत तेरी धन्न कमाई, हरि देण वाला वड्डिआई। जन सन्त तेरी धन्न कमाई, हरि फूलन सेज रिहा विछाई । जन भगत तेरी धन्न कमाई, दोहीं हत्थीं हरि जी रिहा तेरी सेव कमाई। जन सन्त तेरी धन्न कमाई, वेले अन्त कलिजुग प्रभ उत्ते देवे आप सवाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ अबिनाशी उत्ते फूलन बरखा लाई। जन सन्त तेरी धन्न कमाई, करोड़ तेतीस दर खलोते रहे शरमाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ अबिनाशी गूढ़ी नींद रिहा सवाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, पवण उनन्जा सिर छत्तर झुलाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, साचा लेखा दए लिखाई। धन्न कमाई सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे सन्तां आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणे नाल लए उपजाई।

जन भगत तेरी धन्न कमाई, हरि मिल्या सच्चा शाह। सन्त जन तेरी धन्न कमाई, लभ्भ लिआ इक्क नां। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ दर आए पकड़े बांह। जन सन्त तेरी धन्न कमाई, प्रभ मिल्या अगम्म अथाह। जन भगत तेरी धन्न कमाई, औखी घाटी कोई

दिसे ना। जन सन्त तेरी धन्न कमाई, सोहँ साचा रसना चाटीं, गाउँदा रहीं सच्चा नां। धन्न कमाई भगत जन, जन सन्त वड वड्डिआई, मेल मिलावा दोहां धिरां होया प्रभ अबिनाशी तेरे घर सच्चे थां। (१४ चेत २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

६५) धन्न कमाई भगत जन, हरि चरन प्यासा। धन्न कमाई भगत जन, रसन तजाए मदिरा मासा। धन्न कमाई सन्त जन, सोहँ शब्द जपाए सवास सवासा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ मिलण दी रक्खे आसा। धन्न कमाई सन्त जन, निज घर आत्म नर नरायण रक्खे वासा। धन्न कमाई सन्त जन, दरसन पेखे तीजे नैण, मानस जन्म कराए रैहरास। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे होए दासन दासा।

धन्न कमाई भगत जन, हरि वेखण साचे थाउँ। धन्न कमाई भगत जन, हरि प्रभ अबिनाशी देवे ठंडी छाउँ। धन्न कमाई सन्त जन, दरगाह साची लग्गी एका नाउँ। धन्न कमाई भगत जन, लक्ख चुरासी फंद कटाओ। धन्न कमाई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, किरपा करे अगम्म अथाहो।

धन्न कमाई भगत जन, हरि रसन उच्चारे। धन्न कमाई भगत जन, साचा मेल मिले प्रभ अबिनाशी कन्त भतारे। धन्न कमाई सन्त जन, आप बहाए निहचल धाम अटल अटल्ले, सच्चा दिस्से इक्क महल्ल मुनारे। जिथ्थे वसे हरि इक्क इकल्ले, दूसर ना कोई पावे सारे। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख तेरे आत्म दर, आपे वसे साचे घर, साची जोत करे उजिआरे। (६ जेठ २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

६६) धन्न कमाई सन्त जन, हरि रसन ध्याईए। धन्न कमाई सन्त जन, एका लिव लाईए। धन्न कमाई सन्त जन, हउमे ममता रोग गवाईए। धन्न कमाई सन्त जन, चिन्ता सोग रोग मिटाईए। धन्न कमाई सन्त जन, जगत विजोग आप कराईए। धन्न कमाई सन्त जन, सच संजोग इक्क हंढाईए। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, विच आत्म रिहा समाईए।

धन्न कमाई सन्त जन, आत्म बंद्धे। धन्न कमाई सन्त जन, आप मिटाई दूई द्वैती कंधे। धन्न कमाई सन्त जन, दुरमत मैल शब्द रंदे आपे रंदे। धन्न कमाई सन्त जन, एका सच्चा गायण नाउँ साचा शब्द साचा छन्दे। धन्न कमाई सन्त जन, वेखण सच्चा थाउँ, जिथ्थे वसे हरि गोबिन्दे। धन्न कमाई सन्त जन, सद मानण ठंडी छाउँ, निज आत्म परमानंदे। धन्न कमाई सन्त जन, इक्क बणाए पिता माउँ, प्रभ अबिनाशी सद बख्शंदे। धन्न कमाई

सन्त जन, फड़दा अन्तम बाहों, मेट मिटाए सगली चिन्दे। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी रसना कहण आत्म जाए मन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप चढ़ाए साचा चन्दे।

धन्न कमाई सन्त जन, एका लिव लाई। धन्न कमाई सन्त जन, सृष्ट सबाई जिस तजाई। धन्न कमाई सन्त जन, एका इष्ट हरि बणाई। धन्न कमाई सन्त जन, साची दृष्ट आप खुल्ह़ाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी बणत बणाई।

धन्न कमाई सन्त जन, एका लिव लावे। धन्न कमाई सन्त जन, अमृत आत्म अठ्ठे पहर नुहावे। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म खोल्ह़े साचा दर सच महल्ले बूझ बुझावे । धन्न कमाई सन्त जन, एका साचो साचा घर, नर नरायण जोत सरूप जिथ्थे डेरा लावे। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, प्रगट हो दरस अमोघ दिखावे।

धन्न कमाई सन्त जन, सच वहन्दे वहणी। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी दर्शन पेखण साचे नैणी। धन्न कमाई सन्त जन, हरि सच्चा साक सज्जण सैणी। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आत्म देवे साचा वर, अन्तम सार जिस लैणी।

धन्न कमाई सन्त जन, जगत विछोड़े। धन्न कमाई सन्त जन, इक्क प्रीत चरन जोड़े। धन्न कमाई सन्त जन, वेखे एका दर चढ़े शब्द घोड़े। धन्न कमाई सन्त जन, ना जन्मे ना जाए मर, एका वर हरि जी लोड़े। धन्न कमाई सन्त जन, अमृत भंडारे प्रभ जाए भर, देवे वर जिहा लोड़े। धन्न कमाई सन्त जन, साची तरनी जाइण तर, लक्ख चुरासी बंधन तोड़े। धन्न कमाई सन्त जन, आप चुकाइन जम का डर, जोती जोत सरूप हरि, एका मंगण तेरी लोड़े।

धन्न कमाई सन्त जन, जग साची रीता। धन्न कमाई सन्त जन, एका मेल साचे मीता। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म रहे सदा अतीता। धन्न कमाई सन्त जन, मानस जन्म जग विच्च जीता। धन्न कमाई सन्त जन, एका शब्द रसना गाइण, माण गवाइण अठारां धिआए गीता। धन्न कमाई सन्त जन, चरन प्रीती एका लाइण, दिवस रैण हिरदे वसाइण, रक्खण साची प्रीता। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी दर्शन पाइण, सर्ब घट वासी रिदे वसाइण, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, मानस जन्म जाए जग जीता।

धन्न कमाई सन्त जन, हरि साचा सज्जण सुहेला। धन्न कमाई सन्त जन, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता साधन सन्ता आप कराए साचा मेला। धन्न कमाई सन्त जन, साची जोत आत्म धारे। धन्न कमाई सन्त जन, दर्शन लोड़े हरि गिरधारे। धन्न कमाई सन्त जन, देवे दरस हरि अपर अपारे। धन्न कमाई सन्त जन, जगे जोत अलख अभेव इक्क अपारे। धन्न कमाई सन्त जन, एका वंड जगत वणजारे। धन्न कमाई सन्त जन, एका

प्रीत चरन कँवलारे। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे रंगे काया चोला विच संसारे।

धन्न कमाई सन्त जन, रंगी काया चोली। धन्न कमाई सन्त जन, शब्द बैठे साची डोली। धन्न कमाई सन्त जन, काया माटी रुत्त मौली। धन्न कमाई सन्त जन, औखी वाटी दूर घाटी, जिनां रोल घचोली। धन्न कमाई सन्त जन, जोत जगे इक्क ललाटी, जोती जोत सरूप हरि, इक्क सुणाए साची बोली।

धन्न कमाई सन्त जन, नाम वणजारा। धन्न कमाई सन्त जन, देवे सच्चा नाम धन हरि प्यारा। धन्न कमाई सन्त जन, आपे कढ़े झूठा जन, पंजां चोरां कर खुआरा। धन्न कमाई सन्त जन, भाण्डा भरम देवे भन्न, साचा दीपक करे जोत उजिआरा। धन्न कमाई सन्त जन, धर्म राए ना देवे डन्न, प्रभ अबिनाशी होए रखवारा। धन्न कमाई सन्त जन, साचा शब्द सुणाए कन्न, देवे अनहद शब्द सच्ची धुंनकारा। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, अन्त ना पारावारा।

धन्न कमाई सन्त जन, हरि साचा संगी। धन्न कमाई सन्त जन, इक्क वस्त दर साचे मंगी। धन्न कमाई सन्त जन, ख़िमा गरीबी भिक्खी अंगी। धन्न कमाई सन्त जन, एका चोली नाम रंगी। धन्न कमाई सन्त जन, साची लिख्त लिखाई सिँघ मनी मिटदे जाण फरंगी। धन्न कमाई सन्त जन, कलिजुग नेड़ ना आए मात तंगी। धन्न कमाई सन्त जन, गुरमुख सच सुहेले साची दाष्त एका मंगी। जोती जोत सरूप हरि, बेमुख जीवां मानस जन्म करे भंगी।

धन्न कमाई सन्त जन, हरि रसना गावे। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी साचा घ्यावे। धन्न कमाई सन्त जन, सच घर आत्म दुखड़ा लाहवे। धन्न कमाई सन्त जन, एका घर सच महल्ल सोहणी सेजा आसण लावे। धन्न कमाई सन्त जन, साचा हरि साचा नर साचा रंग रंगावे। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, दोहां मेल इक्क करावे।

धन्न कमाई सन्त जन, हरि मिले गहर गम्भीर। धन्न कमाई सन्त जन, होए शांत सरीर। धन्न कमाई सन्त जन, रसना चलाइण शब्द साचा तीर। धन्न कमाई सन्त जन, सन्त मनी सिँघ तेरा वक्त अख़ीर। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे मेट मिटाए शेख़ गौंस औलीए पीर फ़कीर।

धन्न कमाई सन्त जन, वसे सच टिकाणा। धन्न कमाई सन्त जन, साचे चढ़े शब्द बबाणा। धन्न कमाई सन्त जन, कोई ना वेखे राजा राणा। धन्न कमाई सन्त जन, देवे वड्डिआई गऊ गरीब निमाणा। धन्न कमाई सन्त जन, साचा देवे नाम निधाना।

धन्न कमाई सन्त जन, इक्क पिआए अमृत जाम। धन्न कमाई सन्त जन, चरन धूढ़ कराए इशनान। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या मेल साचे शाम। धन्न कमाई सन्त जन, सोहँ बंनै हरि साचा गान। धन्न कमाई सन्त जन, पूरन होए कलिजुग काम, साचा मिल्या एका दान। धन्न कमाई सन्त जन, कोई ना लग्गे एथे दाम। धन्न कमाई सन्त जन, मिले जोत हरि भगवान। धन्न कमाई सन्त जन, सुक्का हरया होवे चाम, अमृत पिआए हरि मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साची जोत जगाए, करे प्रकाश कोटन भान।

धन्न कमाई सन्त जन, हरि हाज़र हज़ूरे। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी आसा मनसा पूरे। धन्न कमाई सन्त जन, एका शब्द बख्शे धुन, अनहद शब्द अनाहद तूरे। धन्न कमाई सन्त जन, सृष्ट सबाई छाण पुण विच्चों लभ्भे सूरे। धन्न कमाई सन्त जन, इक्क जणाए हरि तेरे गुण, एका बख्शे साचा नूरे। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे जख़शे सर्ब कला भरपूरे। धन्न कमाई सन्त जन, मस्तक धूड़।

धन्न कमाई सन्त जन, चरन प्रीती देवे गूढ़। धन्न कमाई सन्त जन, चतर सुजान विच जहान करायण बेमुख मूढ़। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, एका रंग चढ़ाए गूड़।

धन्न कमाई सन्त जन, हरि मिल्या छैल छबीला। धन्न कमाई सन्त जन, एका रंग रंगाए ना जाणे चिट्टा लाल सूहा पीला। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ मिलण दा साचा कीआ हीला। धन्न कमाई सन्त जन, एका जोत अगन लाया तीला। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम रंगीला।

धन्न कमाई सन्त जन, आत्म साचा सुख। धन्न कमाई सन्त जन, कलिजुग माया ना लाए दुःख। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म मिटी तृष्ना भुक्ख। धन्न कमाई सन्त जन, मात सुफ़ल कराए कुक्ख। धन्न कमाई सन्त जन, जन भगत उजल होए मुक्ख। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, मात गरभ ना होए उलटा रुक्ख।

धन्न कमाई सन्त जन, आत्म कुण्डा खोलै। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी अंदर बोले। धन्न कमाई सन्त जन, चरन प्रीती घोल घोले। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ दर बहाए दया कमाए, दर घर सच बणाए गोले। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, आप चढ़ाए शब्द डोले।

धन्न कमाई सन्त जन, आत्म साचा चाओ। धन्न कमाई सन्त जन, काया माटी भाण्डा कच्चा रहे ना किसे थाउँ। धन्न कमाई सन्त जन, आपे बणे छोटा बच्चा, प्रभ अबिनाशी पिता मांओ। धन्न कमाई सन्त जन, हरि साचा काया रचा, एका वेखण साचा नाउँ। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए सच्चा थाउँ।

धन्न कमाई सन्त जन, आत्म मिटे अन्धेरा। धन्न कमाई सन्त जन, ना होवे संञ सवेरा। धन्न कमाई सन्त जन, चुक्के मेरा तेरा। धन्न कमाई सन्त जन, चारों तरफ चार चुफेरे शब्द सरूपी घेरा। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, सदा वसे आत्म नेरा।

धन्न कमाई हरि साचे सन्ता। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या मेल हरि भगवन्ता। धन्न कमाई सन्त जन, सच संजोग प्रभ साचे कन्ता।धन्न कमाई सन्त जन, साचा रस भोग हरि गुणी गुणवन्ता। धन्न कमाई सन्त जन, इक्क चुगाए रसना चोग साचा शब्द आदिन अन्ता। देवे दरस हरि अमोघ, आप बणाए साची बणता। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, सच दए वड्डिआई, लक्ख चुरासी जीव जंता।

धन्न कमाई सन्त जन, निर्मल कर्म उजागर। धन्न कमाई सन्त जन, अमृत भरया काया गागर। धन्न कमाई सन्त जन, एका वेखण साचा सागर। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, साचा वणज आप कराए, गुरमुख साचे लए जगाए, साचे करे नाम सौदागर।

धन्न कमाई सन्त जन, आत्म धुन। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म तुट्टे लग्गी मुन। धन्न कमाई सन्त जन, प्रभ अबिनाशी सच पुकार लए सुण। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, कवण जाणे हरि तेरे गुण।

धन्न कमाई सन्त जन, चले हरि हरि भाए। धन्न कमाई सन्त जन, देवे दरस आप रघुराए। धन्न कमाई सन्त जन, अठ्ठे पहर प्रभ अमृत रिहा बरस, तृष्ना अग्गन बुझाए। धन्न कमाई सन्त जन, लक्ख चुरासी विच्चों लए परख, जोत सरूपी जोत जगाए। धन्न कमाई सन्त जन, जोती जोत सरूप हरि, एका एक धिआए।

धन्न कमाई सन्त जन, एका एक हरि धिआवणा। धन्न कमाई सन्त जन, दूजे नाही सीस झुकावणा। धन्न कमाई सन्त जन, तीजे नैण मेल मिलावणा। धन्न कमाई सन्त जन, चौथे घर पंजां तत्तां हरि जोड़ जुड़ावना। धन्न कमाई सन्त जन, छेआं घरां भेव गूझ खुल्हावणा। धन्न कमाई सन्त जन, सत्तां दीपां पार करावणा । धन्न कमाई सन्त जन, अठां तत्तां बणत बणावणा। धन्न कमाई सन्त जन, नौवां दरां बन्द करावणा। दसवें घर गुरमुख साचा आप बहावणा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, सुखमन नाड़ी टेडा रस्ता सौखा राह वखावणा । निरगुण साची जोत धर, ईड़ा पिंगल आप खुल्हावणा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे सन्त जनां साचा दरस दिखावणा।

एका सेव हरि गुर लाई। सन्त मनी सिँघ तेरी आत्म वजी वधाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच साची जोत टिकाई। (६ जेठ २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

६७) हरिजन जन्म अपार, पुरख हरि पाइंदा। हरिजन जन्म अपार, गुर गोबिन्द दोवें रसन धिआइंदा। हरिजन जन्म अपार, वड्ड गुणी गहिंद चरन ध्यान लगाइंदा। हरिजन जन्म अपार, वड दाता मरगिंद एका ओट रखाइंदा। हरिजन जन्म अपार, बेमुख करन निंद, बेड़ा आपणा आप तराइंदा। हरिजन जन्म अपार, मिले माण विच हिन्द, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत सागर सिंध आप वहाइंदा।

हरिजन जन्म अपार, जोत जगाईआ। हरिजन जन्म अपार, लोकमात मिली वडयाईआ। हरिजन जन्म अपार, घर घर वज्जदी रहे वधाईआ। हरिजन जन्म अपार, घर साचे खुशी मनाईआ। हरिजन जन्म अपार, झुठी काया जगत तजाईआ। हरिजन जन्म अपार, मोह माया तृष्न मिटाईआ। हरिजन जन्म अपार, एका ब्रह्म एका ओट रखाईआ । हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची आप बहाईआ।

हरिजन जन्म अपार, जोत अमोल है। हरिजन जन्म अपार, उतरे पूरे तोल है। हरिजन जन्म अपार, हर हिरदे रक्खे वास वस्से सदा कोल है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द आत्म दर दवारे वजाए सच्चा ढोल है।

हरिजन जन्म अपार, भगत भंडार हे। हरिजन जन्म अपार, मानस जन्म ना आए हार है। हरिजन जन्म अपार, आपा आप गुर संगत उतों दित्ता वार है। हरिजन जन्म अपार, एका मिल्या सोहँ जाप दूजा दिस्से ना कोई बोल है। हरिजन जन्म अपार, तन लग्गा ना कोई पाप, रिहा जगत अडोल है। हरिजन जन्म अपार, आपे मारे तीनो ताप, आत्म पड़दे रिहा खोल्ह है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आदि अन्त करदा रहे सदा चोहल है।

हरिजन जन्म अपार, जोत नुरान्नया। हरिजन जन्म अपार, मिले मेल पुरख अबिनाश हरि भगवान्नया। हरिजन जन्म अपार, प्रभ होया रहे दास प्रभ देवे शब्द निशान्नया। हरिजन जन्म अपार, निज घर आत्म रक्खे वास, मारे तीर निशान्नया। हरिजन जन्म अपार, मानस जन्म करे रैहरास, इक्क सुणाए शब्द कान्या। हरिजन जन्म अपार, जगे जोत मात पताल अकाश, लोकमात करी कुरबान्या। हरिजन जन्म अपार, शब्द जपे स्वास स्वास, हरि देवे वड्ड वड्ड दानया। हरिजन जन्म अपार, आत्म रस रसना करी रास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे वाली दो जहानया।

हरिजन जन्म अपार, गेड़ चुकाइंदा। हरिजन जन्म अपार, लोकमात छेड़ छिड़ाइंदा। हरिजन जन्म अपार, लक्ख चुरासी एका भेड़ भिड़ाइंदा। हरिजन जन्म अपार, शब्द उखेड़ा इक्क लगाइंदा। हरिजन जन्म अपार, आप गिढ़ाए उलटा गेड़ा, बेमुखां गेड़ गिढ़ाइंदा। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वस्से नेरन नेरा आप वखाइंदा।

हरिजन जन्म अपार, जगत दलाल है। हरिजन जन्म अपार, लोकमात अनमुलड़ा लाल है। हरिजन जन्म अपार, प्रभ अबिनशी लक्ख चुरासी विच्चों करे भाल है। हरिजन जन्म अपार, आप लगाए साचा फल काया डाल है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त सद चले अव्वलड़ी चाल है।

हरिजन जन्म अपार, जोत निरालीआ। हरिजन जन्म अपार, जगी जोत इक्क अकालीआ। हरिजन जन्म अपार, सोहँ बाणा तन पहनाए, एका देवे शब्द दुशालिआ। हरिजन जन्म अपार, आप बहाए साची नाए, दरगाह साची आप बहा लिआ। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां आत्म रंडी, झूठी काया दिसे खालीआ।

हरिजन जन्म अपार, जगत वणजार है। हरिजन जन्म अपार, एका हरि सच्चा भतार है। हरिजन जन्म अपार, बणया रहे घर साचे दी साची नार है। हरिजन जन्म अपार, वरदा रहे धरदा रहे पुरख अबिनाश सच्चा इक्क सरदार है। हरिजन जन्म अपार, भगत अमोल। हरिजन जन्म अपार, सदा अडोल। हरिजन जन्म अपार, जन भगत सद अतोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे वर, ना जाए हर देवे शब्द झकोल।

हरिजन जन्म अपार, सदा रंग रातिआ। हरिजन जन्म अपार, प्रभ खोले आत्म ताकिआ। हरिजन जन्म अपार, आप चुकाए पूरब लेखा पिछला बाकीआ। हरिजन जन्म अपार, आप चढ़ाए साचे घोड़े शब्द जणाए साचा राकीआ। हरिजन जन्म अपार, अमृत साचा सीर पिआए, बण बण साचा साकीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए विच्च मात नाथ त्रैलोकीआ।

हरिजन जन्म अपार, रंग चलूल है। हरिजन जन्म अपार, ना जाए भूल है। हरिजन जन्म अपार, मेल मिलावा कन्त कन्तूहल है। हरिजन जन्म अपार, सच सिँघासण डेरा लाए ना दिस्से पावा चूल है। हरिजन जन्म अपार, एका शब्द तीर चलाए पुरीआं लोआं मारे त्रसूल है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मिल्या कन्त कन्तूहल है।

हरिजन जन्म अपार, जगत सुधार है। हरिजन जन्म अपार, हरि मिल्या मीत मुरार है। हरिजन जन्म अपार, आत्म जगी जोत काया होई उजिआर है। हरिजन जन्म अपार, दुरमत मैल गया धोत, मानस जन्म गया सुधार है। हरिजन जन्म अपार, इक्क कराया वणज वपार है। हरिजन जन्म अमोल, मिल्या मेल हरि भगवानया।

हरिजन जन्म अपार, लोकमात देवे दात, प्रभ करे पुरख सुजान्या। हरिजन जन्म अपार, मिटे अन्धेरी रात, आत्म मारे झात जगे जोत महान्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाए, साचे धाम आप बहाए, देवे नाम निशानीआं।

हरिजन जन्म अपार, आत्म दात है। हरिजन जन्म अपार, दर साचे मिली उत्तम जात है। हरिजन जन्म अपार, चरन प्रीती बध्धा सच्चा नात है। हरिजन जन्म अपार, जगत रीती परखे नीती अन्तम पुच्छे वात है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दरस दिखाए दया कमाए बैठा रहे इक्क इकांत है।

हरिजन जन्म अपार, मेल हरि इक्क इकांतिआ। हरिजन जन्म अपार, प्रभ देवे अमृत बूंद सवांतिआ। हरिजन जन्म अपार, प्रभ रिहा पूरे तोल तोल, बंधाए साचा नातिआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठारां माघ दया कमाए, गाँधी बांधी बंनू लिआए, बणाए साचा राकीआ। (१६ हाढ़े २०११ बिक्रमी)

६८) उठ उठ जाग, हरि भगत वणजारया। उठ उठ जाग, प्रभ खोल्हे सच दवारया। उठ उठ जाग, आत्म छड्ड झूठा हंकारया। उठ उठ जाग, नाता तुटे मोह माया विच संसारया। उठ उठ जाग, प्रभ चरनी जाणा छोह, खुल्हे भेव अपर अपारया। उठ उठ जाग, अवर ना दीसे को, एका जोत जगा रिहा। उठ उठ जाग, आत्म नीर साचा चो, जगत नीर क्यों वहा रिहा। उठ उठ जाग, धो आपणा पिछला दाग, जुग त्रेता फेर सुहा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ लाए काया भाग, दीपक जोती विच्च टिका रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ हँस बणाए काग, सोहँ मोती चोग चुगा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ पकड़े तेरी वाग, साचा राह इक्क वखा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ मिल्या कन्त सुहाग, साची बणत मात बणा रिहा। उठ उठ जाग, सुण साचा राग तुटे मुन खुल्ल्हे सुन्न, प्रभ साचा शब्द सुणा रिहा। उठ उठ जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत विछोड़ा आपणा आप गवा रिहा।

उठ उठ जाग, वक्त सुहेलड़ा। उठ उठ जाग, पूरन होए भाग प्रभ मिल्या इक्क इकेलड़ा। धुरदरगाही साचा माही नौजवाना बली बलवाना वड्ड अभेदड़ा। शब्द रक्खे नाम मस्ताना, आत्म बन्ने हरि जी गाना, साचा बख्शे चरन ध्याना, आपे बणे सज्जण सुहेलड़ा । सोहँ शब्द पीणा खाणा, सदा जीणा नाउँ रखाना, तन पट काया चोली आपणी आप सवाणा, प्रभ आप कराया आपणा महल्लड़ा।

साचा शब्द रसना गाणा। छत्ती रागाँ माण गवाणा। बत्ती दन्दी हरि जी घ्याणा। रसना होए ना गंदी, मदिरा मास मुख ना लाउणा। आत्म चढ़े चन्द नौंचन्दी, मस्सया अन्धेर आप मिटाउणा। खुशी कराए बन्द बन्दी, जगत विकार झूठी धंदी, आप मिटाए भरमी कंधी, नावें दर बन्द कराना। प्रभ अबिनाशी सद बख्शंदी, सोहँ शब्द पाए फन्दी, लक्ख चुरासी होई अन्धी, गुरमुख साचे साचे धाम, दसवें घर दसे इक्क टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि सन्त सुहेला इक्क इकेला, मिल्या मेल श्री भगवाना। उठ उठ उठ जाग , शब्द वणजारया। उठ उठ उठ जाग, प्रभ साचा बख्शे चरन प्यारया । उठ

उठ उठ जाग, हरि देवे चरन धूड़, जीव जंत मूढ़, चतुर सुघड़ सिआणिआ। उठ उठ उठ जाग, लक्ख चुरासी कूड़ो कूड़, साचा नूर इक्क भगवानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हरि दर दुलारे, आत्म देवे ब्रह्म गिआनया। (२६ पोह २०११ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

६६) हरि भगत हरि दर नयार, हरि भगत हरि घर सच वसानया। हरि भगत ना जन्मे ना जाए मर, एका रंग सद रहान्नया। हरि भगत आवण जावण चुक्के डर, मिले माण दो जहान्नया। हरि भगत अमृत तीर्थ नुहावे साचे सर, खुल्ले बन्द कवाड़ जगे जोत इक्क महान्नया। हरि भगत शब्द सरूपी अठ्ठे पहर रिहा लड़, मार मिटाए पंज शैतान्नया। हरि भगत साचे घाड़न रिहा घड़, ना भन्ने डंने कोई विच जहान्नया। हरि भगत ना कोई सीस ना कोई धड़, साचा नाम जगत निशान्नया। हरि भगत दस्सम दवारे चढ़, मिले मेल बली बलवान्नया। हरि भगत दसम घर जाए वड़, मिले जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान्नया।

हरि भगत जगत नयारा। हरि भगत प्रभ पाए सारा। हरि भगत मात साची धारा। हरि भगत दात शब्द वणज वपारा। हरि भगत नात, गुर चरन प्यारा। हरि भगत पित मात, नरायण नर निरँकारा। हरि भगत बैठा रहे इक्क इकांत, साची पुरी कर पसारा। हरि भगत प्रभ वेखे मार झात, जोती नूर इक्क उजिआरा। हरि भगत अमृत बूंद पीए स्वांत, मिटे अन्ध अन्धयारा। हरि भगत उत्तम जात, मिल्या मेल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा।

हरि भगत हरि दुआर। हरि भगत वड्डिआई विच संसार। हरि भगत मिले वधाई, रसना गाए नर नार। हरि भगत ना होए जुदाई, दो जहानी पहरेदार। हरि भगत माणे ठंडी छाईं, देवे प्रभ किरपा धार। हरि भगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए आप बहाए सच साचे दरबार।

हरि भगत साजण साजिआ। हरि भगत रक्खे लाज गरीब निवाज़िआ। हरि भगत मारे अवाज़, सवारे काजिआ। हरि भगत सद पहनाए शब्द ताज, वेखे खेल कल कि आजिआ। हरि भगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात देवे वड्डिआई, वज्जे वधाई अन्तम कल देस माझिआ।

हरि भगत मिले वडयाईआ। हरि भगत माझे देस जोत जगाईआ। हरि भगत कर कर वेस, निहकलंक नरायण नर साची वेल वधाईआ। हरि भगत सदा आदेस, कल साची बणत बणाईआ । हरि भगत ब्रह्मा विष्न महेश कल शिव शंकर धार रखवाईआ। हरि भगत नर नरेश, कर साची पुरी आप वसाईआ। हरि भगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे माण, लोकमात करे रुशनाईआ।

हरि भगत हरि उधारे, निहकलंक कल जामा धारे। जगे जोत निरालीआ। हरि भगत प्रभ पावे सारे, कलिजुग तेरी अन्तम वारे, कर के खेल भगत मेल मिलाईआ। कलिजुग जीव थक्के ना कोई पावे साची सारे। चले चाल हरि निरालीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, सृष्ट सबाई साचे दर एका सदा सुहाईआ।

हरि भगत हरि भण्डार, शब्द अतुट्ट नाम अपार, सच कराए वणज वपार, देवे माण वडयाईआ। सतिजुग तेरी तिक्खी धार, गुरमुख विरले उतरे पार, प्रभ अबिनाशी पावे सार, ना होवे अन्त जुदाईआ। लक्ख चुरासी थक्के हार, किसे ना दिस्से पार किनार, गुरमुखां मिल्या हरि निरँकार, आत्म जोती दीप इक्क जगाईआ। शब्द घोड़े हो असवार, जन भगतां रिहा पैज सवार, दिवस रैण करे काज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल जोत वरन गोत ना कोई कराईआ । (पहली पोह २०११ बिक्रमी)

७०) धन्न कमाई सन्त जन, रसना हरि हरि गाया। धन्न कमाई सन्त जन, एका वार पुरख अबिनाशी पाया। धन्न कमाई भगत जन, आत्म दर बन्द खुल्हाया। धन्न कमाई भगत जन, साचे घर एका एक डेरा लाया। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म तीर्थ नुहाए साचे सर, दूई द्वैती दुरमत मैल गवाया। धन्न कमाई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, दोहां धिरां एका घर साचा मेल मिलाया ।

धन्न कमाई सन्त जन, हरि चरन ध्यान। धन्न कमाई भगत जन, आत्म जोती जोत मिलान। धन्न कमाई सन्त जन, वरन गोती भेव चुकान। धन्न कमाई भगत जन, साचा शब्द माणक मोती चोग खाण। धन्न कमाई सन्त जन, मिल्या मेल धुर संजोगी, लक्ख चुरासी फंद कटाना। धन्न कमाई भगत जनां, करे दरस हरि अमोघी, माया ममता मोह चुकाना। धन्न कमाई सन्त जन, आत्म रस रिहा भोगी, आत्म सेजा साचा कन्त इक्क वसाना। धन्न कमाई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, दोहां धिरां एका घर, शब्द सरूपी मेल मिलाना।

धन्न कमाई सन्त जन, शब्द अधारया। धन्न कमाई भगत जन, रसना गाए हरि गुण गुणवन्ता गुण निधान्नया। धन्न कमाई सन्त जन, माया राणी छाण पुण, एका नाता पुरख बिधाता, रक्खे चरन धिआन्नया। धन्न कमाई भगत जन, एका वेखे पिता माता, पुरख अबिनाशी चतर सुजान्नया। धन्न कमाई सन्त जन, दुरमत मैल तन तों नासी, आत्म जोत सच्ची प्रकाशी, वेखे खेल महान्नया। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म करे रैहरासी, अन्तम वेले बन्द खलासी, नेड़ ना आए पंज शैतान्नया। धन्न कमाई सन्त जन, जगत वड्डिआई भगत दोहां मिल्या नाम धन, रसना गाया स्वास स्वासी।

धन्न कमाई सन्त जन, सदा अडोलिआ। धन्न कमाई भगत जन, हरि अंदरे अंदर बोलिआ। धन्न कमाई सन्त जन, पूरा तोल तोलिआ। धन्न कमाई सन्त जनां, आत्म सेजा बैठा इकांत, आत्म पड़दा खोल्लया। धन्न कमाई भगत जन, अमृत पीवे बूंद स्वांत, अन्तम मेट मिटाए अन्धेरी रात, साची रंगण नाम चढ़ाए, आदि अन्त कदे ना डोलिआ। जोती जोत सरूप हरि, दोहां साची बणत बणाए, तन पहनाए शब्द सच्चा चोलिआ।

(११ फग्गण २०११)

७१) हरिजन जन्म अमोल, दरस अमोघ है। हरिजन जन्म अमोल, मिटिआ हउमे रोग है। हरिजन जन्म अमोल, आपे चिन्ता आपे सोग है। हरिजन जन्म अमोल, आत्म रस साचा रिहा भोग है। हरिजन जन्म अमोल, सोहँ शब्द अन्तम कल चुगे साची चोग है। हरिजन जन्म अमोल, ना होए कदे विजोग है। हरिजन जन्म अमोल, मेल मिलावा साचे कन्त लिखया धुर संजोग है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत है।

हरिजन जन्म अमोल, जगत बणाइंदा। हरिजन जन्म अमोल, हँस बणया काग माणक मोती शब्द चोग चुगाइंदा। हरिजन जन्म अमोल, लक्ख चुरासी रही सोती, गुरमुख विरला प्रभ दरस पाइंदा। हरिजन जन्म अमोल, दुरमत मैल प्रभ दर धोती, माया जगत जलाइंदा। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे भाणे सद सद चलाइंदा।

हरिजन जन्म अमोल, जोती अकार है। हरिजन जन्म अमोल, शब्द वेखे साची धार है। हरिजन जन्म अमोल, मानस जन्म लाए लेखे, मातलोक लिआ अवतार है। हरिजन जन्म अमोल, बेमुखां रहे भरम भुलेखे, करे खेल हरि करतार है। हरिजन जन्म अमोल, प्रभ अबिनाशी दर्शन पेखे , वेखे नैण मुधार है। हरिजन जन्म अमोल, मेट मिटाए बिधना लिखी रेखे, सृष्ट सबाई पड़दे रिहा खोल्ल है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए साचे लेखे, उतरे पूरे तोल है।

हरिजन जन्म अमोल, अमोल अमुल्लड़ा। हरिजन जन्म अमोल, पूरे तोल कलिजुग अन्तम तुल्लड़ा। हरिजन जन्म अमोल, वसदा रहे अन्तम कल काया कोट कुल्लड़ा। हरिजन जन्म अमोल, साचा राह घर दसदा रहे छोटा बाला लाल अमुल्लड़ा। हरिजन जन्म अमोल, चौदां लोकां चरनां हेठ झस्सदा, गाया पुरख अबिनाशी, गया चरनां कोल। हरिजन जन्म अमोल, धर्म राए दर हस्सदा, गया अठाईआं कुण्डां कुण्डा खोल्ल। हरिजन जन्म अमोल, दूर दुराडा लम्मा पैंडा बाल अंञाणा सिध्धा गया शब्द वजाउँदा जाए ढोल। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, साची रीती कलिजुग चलाए चरन प्रीती तोड़ निभाए, परखे नीती साचा मीती, काया करे ठंडी सीती, दूई द्वैती पड़दे रिहा खोल्ल।

हरिजन जन्म अमोल, साचा राह वखाणिआ। हरिजन जन्म अमोल, प्रभ वेखे बाल अंञाणिआ। हरिजन जन्म अमोल, दस्से राह वड्डा बेपरवाह कलिजुग हरि वडा सुघड़ सिआणिआ। हरिजन जन्म अमोल, कट्टे लक्ख चुरासी फाह, मिले माण दरबानया। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दास घनकपुर वास, अन्त करे पछाणिआ।

हरिजन जन्म अमोल, जीवण जुगत है। हरिजन जन्म अमोल, दर साचे मिली मुक्त है। हरिजन जन्म अमोल, हरि सवारे आपणी भुगत है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआर आप सुहाए, चरन प्रीती तोड़ निभाए, बेमुख जीवां दिस ना आए, सद वसे नेड़ दूर कीड़ हस्त है।

हरिजन जन्म अमोल, रीत अटल है। हरिजन जन्म अमोल, सद वसे धाम अचल है। हरिजन जन्म अमोल, साचा मार्ग इक्क वखाए रसना धिआवे घड़ी घड़ी पल पल है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप लगाए काया अमृत फल है।

हरिजन जन्म अमोल, चाल अव्वलड़ी। हरिजन जन्म अमोल, वसे काया इक्क अकल्लड़ी। हरिजन जन्म अमोल, उतरे पूरे तोल, झूठी दिस्से जगत चंमड़ी। हरिजन जन्म अमोल, आत्म गंढां रिहा खोल्ह, लक्ख चुरासी जूठी झूठी माया लूठी, अन्तम वेले पल्ले किसे ना दिस्से दमड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम अन्त आपे बणे पिता आपे बण अंमड़ी।

हरिजन जन्म अमोल, शब्द भण्डार है। हरिजन जन्म अमोल, जन्म अपार है। हरिजन जन्म अमोल, एका रंग सच्चा संग सच्ची सरकार है। हरिजन जन्म अमोल, मानस जन्म ना होए भंग, लोकमात ना आए दूजी वार है। हरिजन जन्म अपार, आत्म चाढ़े साचा रंग, ना होए मात खुआर है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिल्या नर हरि हरि नर सच्चा भतार है। (१६ हाढ़े २०११ बिक्रमी)

* * * * *

७२) हरिजन शब्द अधार, दर प्रवानया। हरिजन शब्द अद्धार, भगत भगवानया। हरिजन शब्द अद्धार, पारब्रह्म पतिपरमेशवर आपणा आप पछानया। हरिजन शब्द अधार, जगत पित जगतेशवर एका रंग रंगानया। हरिजन शब्द अधार, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम तरानया। (५ माघ २०११ बिक्रमी)

* * * * *

७३) धन्न कमाई सन्त जन, सद वसे दवारया। धन्न कमाई भगत जन, मन मन्ने विच्च

संसारया। धन्न कमाई सन्त जन, शब्द डोरी काया बंने, पंचां चोरां खेल अपारया। धन्न कमाई भगत जन, आप कढाए झूठे जने, वेखे खेल सच्ची सरकारया। धन्न कमाई सन्त जन, साचा शब्द सुण कन्ने, साचा राग गा रिहा। धन्न कमाई भगत जन, आपे तोड़े मन माणे, बजर कपाटी भेव खुल्ला रिहा। धन्न कमाई सन्त जन, धन्न कमाई भगत जन, दोहां अंदर साचे मन्दर आपणी जोत जगा रिहा। धन्न कमाई भगत जन, आत्म जोत निरालीआ। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या मेल हरि भगवानया। धन्न कमाई सन्त जन, दीपक जोती कर उजिआर, मस्तक गगन जोत निरालीआ। धन्न कमाई भगत जन, दोहां करे कराए हरि रखवालीआ।

धन्न कमाई सन्त जन, शब्द प्रान है। धन्न कमाई भगत जन, आत्म ब्रह्म ज्ञान है। धन्न कमाई सन्त जन, साचा रक्खे इक्क निशान है। धन्न कमाई भगत जन, दोहां मेल हरि भगवान है। धन्न कमाई सन्त जन, मिले नाम वस्त अमोलिआ। धन्न कमाई भगत जन, साचा तोल मात तोलिआ। धन्न कमाई सन्त जन, काया मन्दर कुण्डा खोल्लया। धन्न कमाई भगत जन, दोहां वेस आपे कर, वेख वखाणे काया चोलिआ। काया चोला रंग अपारा, आपे रक्खे शब्द विचोला, दोहां धिरां मेल मिला रिहा। बजर कपाटी पड़दा खोल्ला, तीजे नैण दरस दिखा रिहा। आपे बणया भोला भाला, गुरमुख साचे सन्त सुहेले, चारों कुण्ट कराए मेले, आप आपणी बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, साची रंगण नाम चढ़ा रिहा। (१८ हाढ़े २०१२ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

७४) कलिजुग अन्तम गुर नानक लग्गी सट्ट, गुरमुख कोई नज़र ना आईआ। जिन्नां दे के आया नाम सति, नाम सति गए भुलाईआ। जिन्नां जणाई ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या कर पढ़ाईआ। जिन्नां अंदर रखाया धीरज सति, सतिवाद नींह रखाईआ। तिन्नां भुल्लया कमलापत, बैठे मुख छुपाईआ। मैं कह के आया कलिजुग औणा पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जो सरनी जाए ढठ्ठ, वेले अन्त लए बचाईआ। जो दर तों जाए नट्ठ, गुर नानक ना दए गवाहीआ। गोबिन्द आपणी लाई लेखे रत, गुरसिख रती मुल ना पाईआ। घर घर आई मनमत, गुरमत गए भुलाईआ। आपणा बैठे सत्थर घत, यारड़ा सथर गए भुलाईआ। अन्तम खेड़ा होणा भट्ठ, ना सके कोई बचाईआ। मैं दूई द्वैत मेट के आया फट, मेरयां सिखां मेरा फट दित्ता चराईआ। मैं खोल्ल के आया साचा हट्ट, राम दास सेवा लाईआ। ओथे नफ़ा सके ना कोई खट, जो आए जाए पत गवाईआ। मेरे प्रेम प्यार ज़ख़म उत्ते विकार लूण रहे घत, कुकरमी आपणा कर्म कमाईआ। जे कोई सच्ची देवे दस्स, अग्गों बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण मिल्या हरि, हरि नानक रूप वटाईआ।

नानक फट्ट लगा घा, घाओ सके ना कोई मिटाईआ। लोकमात आया बेपरवाह, परवाह

ना कोई रखवाईआ। जिस चलाए आपणे राह, सो राह गए भुलाईआ। अन्त कौण पकड़े बांह, बिन हरि ना कोई छुडाईआ। जो हरि गए भुला, नानक गुर ना दए सफ़ाईआ। कलिजुग अन्त फट्ट लगा आ, मनमुखता आपणा वार रही चलाईआ। गुरमुख वेख चढ़या चा, सतिगुर नानक खुशी मनाईआ। सिँघ गिरधार सेव रिहा कमा, जिस दी सार किसे ना पाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सीस आपणे लए उठा, बिन हत्थां सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेशा आप जणाईआ। (१८ कतक २०१८ बिक्रमी)

"उह पैगम्बर काहदा उह पीर काहदा उह पिउ काहदा उह पुत्त काहदा जिस दा धर्म दा ना वधे अग्गा, सच विच्च सुच ना कोई समाईआ ।" (२१-५४६)